अक्टूबर 2025

दुसरका अंक

दीया बाती

भोजपुरी, तिमाही, ई - पत्रिका

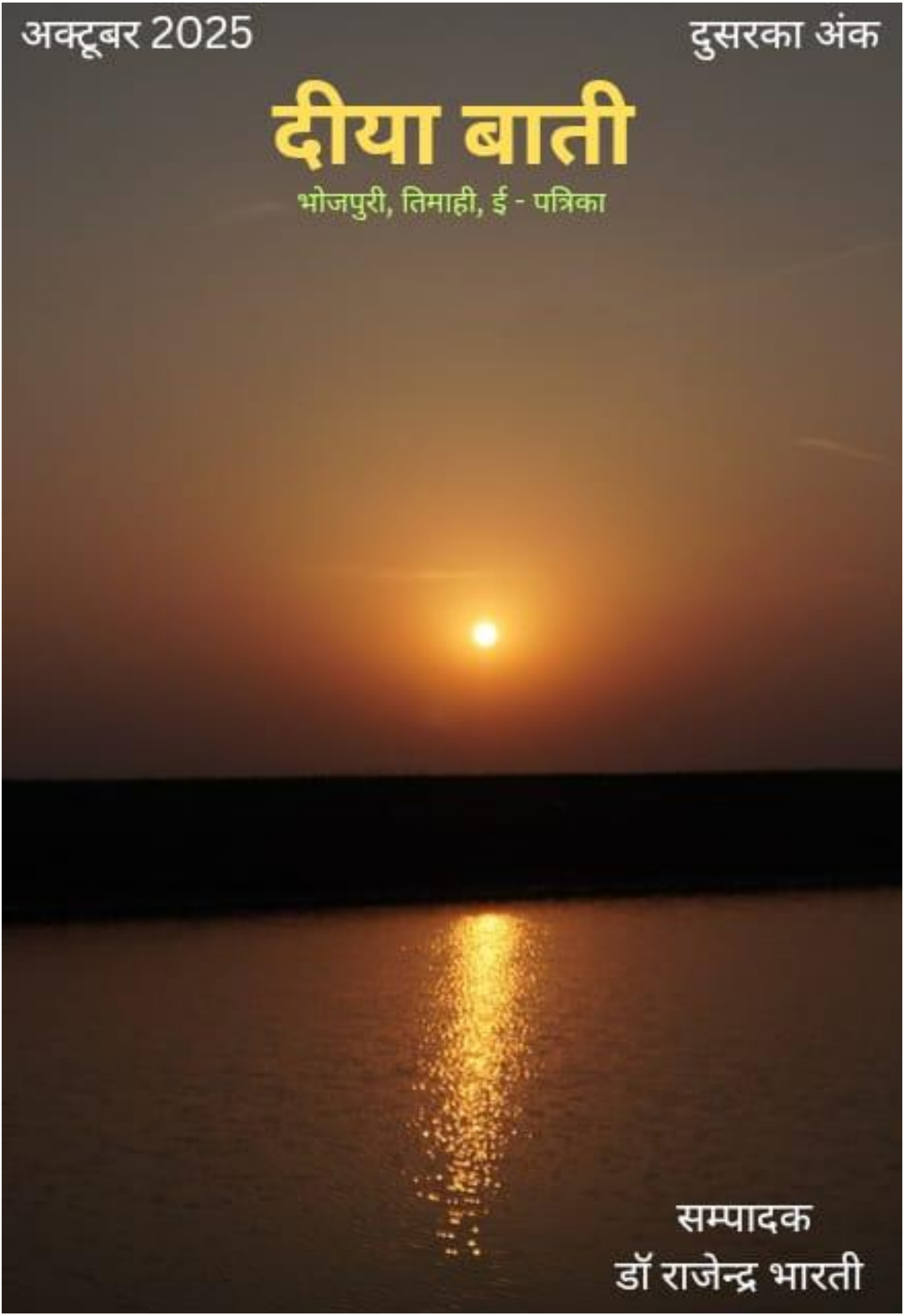

सम्पादक

डॉ राजेन्द्र भारती

दीया बाती

दुसरका अंक — अक्तूबर 2025

तिमाही, भोजपुरी, ई-पत्रिका

संपादक
डॉ राजेंद्र भारती

सह संपादक
डॉ कादम्बिनी सिंह

प्रबंध संपादक
सुनील कुमार यादव

ग्राफिक्स
सुनीता पर्वत

कंपोजिंग
संदीप वर्मा

वेबसाइट संचालन
संत प्रकाश शर्मा

कानूनी सलाहकार - एडवोकेट श्वेता पाण्डेय 'खुश्बू'

आवरण चित्र
सुनील कुमार शर्मा
सचल दूरभाष 7355545388

संपादन कार्यालय
C/O डॉ राजेंद्र भारती
अमृतपाली, सहरसपाली, बलिया
सचल दूरभाष 7007319538

निहोरा

अधिक से अधिक भोजपुरिया लोगन तक एह पत्रिका के पहुंच होखे, एकर सार्थक प्रयास के सहयोग चाहीं ।

घोषणा

1. पत्रिका में छपल लेख, कविता, कहानी, गीत, गजल, निबंध आदि विषय वस्तु के पूरा जिम्मेदारी लेखक लोग के बा । केवनो लेख से पत्रिका परिवार के सहमति होखे, ई जरूरी नइखे ।
2. सब पद अवैतनिक ।

सम्पादकीय के बहाने

रउवां सभ क प्यार, दुलार दीया बाती के बहुते मिल रहल बा । दीया बाती परिवार रउवां सभ के हृदय से आभारी बा । अइसही स्नेह बनल रहो ।

भोजपुरी साहित्य के समृधि खातिर हर विधा मे लेखन बहुत जरूरी बा । एकरा अलावे विज्ञान, पर्यावरण, स्वास्थ्य, समाज मे फईलत विकृति, खेल, नाटक से संबन्धित रचना होखे के चाहीं । खाली कविता, गीत, ग़ज़ल से विकास सम्भव नईखे ।

रउवां सभ से निहोरा बा कि सामयिक विषय, विशेष तीज - तेवहार आ मौसमी रचना से दीया बाती के भंडार भर दिहीं ।

पुस्तक समीछा खातिर समीक्षा के संगे पुस्तक के एक प्रति आवश्यक बा। दीया बाती से समीक्षा करवाए खातिर पुस्तक के दू प्रति चाहीं ।

आशा बा हमार निहोरा पर रउवां सभे धियान देब ।

राउर आपन

डॉ राजेन्द्र भारती

सम्पादक

शुभकामना संदेश

============

भाषा के अपमान सभ्यता के अपमान बा । भाषा के क्षरण संस्कृति के क्षरण बा । जे ई बात कहे ला कि भाषा बदे शोर मचउला का जरूरत नइखे, ऊ ई बतिया भुला जाला कि भाषा अपने साथ का का लेके आवेले अउर ई भाषा जब जाई त कुल लेके चल जाई ।

आज भोजपुरी जनपद में लोकजीवन के नष्ट होवे क खतरा मंडरा रहल बा । पर्व आ दैनिक जीवन के उल्लास शराब आ जुआ में बदलत जात बा । औरत लोगन के सम्मान खतम होत बा, आ लोकलाज त देखाते नइखे ।

सादगी, सरलता, समृद्ध लोकजीवन, संस्कृति, कोमलता, मधुरता ई कुल भोजपुरी भाषा के विशेषता बा । जब ले भोजपुरी बोले में लोगन के लाज ना लागी, तब तक भोजपुरी जनपद में ई कुल विशेषता बनल रहे ।

समाज आ संस्कृति के बचावे खातिर भाषा के बचावल जरूरी बा । आज धन आ पूजी के युग में ई सबका बस के बात नइखे । भाषा जइसन चीज के बचावे खातिर बड़ा धीरज, मिशनरी भाव आ संकल्प चाही ।

कबीरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाटी हाथ ।
जो घर फूंके आपनौ, सो चले हमारे साथ ।

ए होम में हाथों जरेला आ करेजा भी । लेकिन दीया बाती क टीम आ हमहन के बड़ बुजुर्ग साहित्यकार राजेंद्र भारती जी ई बीड़ा उठउले बानी ।

दीया बाती के माध्यम से नया नया साहित्यकार लोगन के ऑनलाइन पढ़ला के मौका मिल जात बा । एकरा नया अंक बदे अनघा बधाई आ शुभकामना । अइसही ई पत्रिका हमहन में भोजपुरी खातिर गौरव बोध उत्पन्न करे, आ सब के भोजपुरी में लिखे पढ़े आ बोले बदे प्रेरित करे, ईहे हमार भगवान से प्रार्थना बा ।

माधव कृष्ण
साहित्यकार
प्रबन्धक - पी आई एस स्कूल
गाजीपुर

कहवां का बा

निबंध

1. छठ परब क महातम (आरती पाण्डेय) 1

2. गोवर्धन पूजा अऊर भइया दूज (अर्चना श्रीवास्तव) 4

3. कईसे अइली भारत में लक्ष्मी जी (डॉ गणेश पाठक) 6

4. दशहरा परब (डॉ॰ जयप्रकाश तिवारी) 9

5. जिउतिया (रामसागर सिंह) 13

6. छठ विशेष (भगवती प्रसाद द्विवेदी) 17

कहानी

7. घीव घोसल रोटी (देवकुमार सिंह) 20

8. माई के जीव (रामसागर सिंह) 24

9. मीठवा (डॉ सुशीला ओझा) 26

10. चुप्प बुरबक (रिंकी सोनी 'आतिशी') 30

11. अन्हरिया में अँजोरिया (डॉ शिप्रा मिश्रा) 34

12. इंसाफ के असरा (सुरेश कांटक) 37

कविता

13. नेह के डोर (श्वेता पाण्डेय मिश्र 'खुश्बू') 53

14. बूढ़ा बूढ़ी (श्वेता राय) 55

15. जमाना (सदानंद गाजीपुरी) 57

16. बे - मौसम बरखा (तौसीफ़ अहमद) 58

17. सबके मन में लाखों पेंच (अनिरुद्ध कुमार सिंह) 60

18. मन के आस जनि टूटे पावे (डॉ जनार्दन चतुर्वेदी) 62

19. सोंची कइसन गाँव रहे (अनिरुद्ध कुमार सिंह) 64

20. का - का बेचाता (रिशु कुमार गुप्ता) 66

21. कण - कण में राम (शशिलता पाण्डेय 'सुभाषिनी') 68

22. समय (आरती पाण्डेय) 69

23. जाड़ा आइल (अंकुश्री) 71

24. पत्थर कोइला (अंकुश्री) 72

गीत

25. सांवरी पुतरिया (रिंकी सोनी 'आतिशी') 73

26. प्रीत (डॉ० रघुनाथ उपाध्याय 'शलभ') 74

27. दहेज के लोभी (पुरन्जय कुमार गुप्ता 'चमन देहाती') 75

गज़ल

28. बरसि जाई बदरी (डॉ कादम्बिनी सिंह) 76

29. बीतल कुल बतिया (डॉ कादम्बिनी सिंह) 77

30. महफिल (जमील मीर) 78

31. साँप (डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल) 79

32. दुख के गठरी (राम नाथ 'बेख़बर') 80

33. बिहान (कृष्णदेव 'घायल') 81

34. गजल (शशि प्रेमदेव) 82

35. ज्ञान (तौसीफ़ अहमद) 83

लघु कथा

36. करनी (मूल - मंटो, अनुवाद - डॉ रामरक्षा मिश्र 'विमल') 84

37. सांड़ (मनोकामना सिंह अजय) 85

38. केहू ना मानेला (राजेश भोजपुरिया) 86

39. तब देखावटी ना, दिल के रिश्ता होखे (राजेश 'श्रेयस') 88

विविध

40. सब कुछ बदल गइल (संतोष दीक्षित) 90

41. भोला नाथ गहमरी (रामपुकार सिंह 'पुकार गाजीपुरी') 92

छठ परब क महातम

भारतीय संस्कृति में प्रचलित कवनों भी पर्व - त्योहार खाली धार्मिक अनुष्ठान भर ही ना ह, बल्कि ओह में जीवन के गहिर मूल्य आ दर्शन छिपल होखेला । छठ पर्व भी एह परंपरा के एगो अद्भुत उदाहरण ह । ई पर्व खासकर बिहार, उत्तर प्रदेश आ झारखंड में बहुते ही आस्था ,विश्वास, शुद्धता आ पवित्र मन से मनावल जाला । अब त एह परब के देशभर सहित विदेश में भी बहुते प्रचार - प्रसार भइल बा । दुनिया भर के लोग अपना सामर्थ्य और श्रद्धा के हिसाब से एह पर्व के मना रहल बाड़े । बिहार आ उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक पहिचान आ लोक आस्था के सभसे बड़का पर्व छठ अब अंतरराष्ट्रीय मंच प आपन पहिचान दर्ज करावे के भी तैयारी में बा । कला, संस्कृति आ युवा विभाग छठ के यूनेस्को के अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल करावे के दिशा में प्रयासरत बा ।

छठ सबले पवित्र आ कठोर व्रत हवे । ई सूरज भगवान आ छठी मइया के पूजा हवे । मानल जाला कि सूरज देवता से जीवन में उर्जा, आरोग्यता आ सुख - समृद्धि मिलेला । छठी मइया संतान सुख आ घर - परिवार के रक्षा करेली । लोक में इ आस्था आ विश्वास बा की जे मन से छठी मइया के व्रत करेला, ओकरा सब मनोकामना पूरा होला । छठी मइया ओकर हर मुराद पूरी करेली ।

छठ चार दिन तक चले वाला अदभुत परब ह । व्रती लोग चार दिन तक शुद्धता से उपवास आ अनेक विधि विधान करेला । ई पर्व में मन, वचन आ तन के पवित्रता बहुत जरूरी होला । चार दिन तक चले वाला एह पर्व में पहिला दिन – नहाय - खाय कहल जाला । गंगा नहाई के घर के साफ - सफाई होला । व्रती लोग शुद्ध भोजन (कद्दू-भात, दाल) खाईला । दूसरका दिन के – खरना कहल जाला । दिनभर उपवास क के सांझे व्रती गुड़ - खीर, घी लगल रोटी आ फल के पारण करेला । ओकरा बाद परिवार - पड़ोस में भी प्रसाद बंटेला । तीसरका दिन – संध्या अर्घ्य होला । व्रती नदी - तालाब किनारे जाके डूबत सूरज के अर्घ दिहेला । सूप में ठेकुआ, फल, गन्ना, नारियल सजावल जाला । छठी माई आ सुरुज देव के गीत - भजन गावल जाला । चउथा दिन – भोर में अर्घ्य दियाला । भिनसारे उगते सूरज के अर्घ दिहल जाला । ई सबसे पवित्र घड़ी होला । अर्घ के बाद व्रत के पारण क के प्रसाद बाटल जाला ।

इ पर्व में कवनो भी पंडित आ पुजारी के ज़रूरत ना होला , हर व्रती आपन श्रद्धा से पूजा करेला । ठेकुआ छठ के प्रमुख प्रसाद हवे । पूरा गाँव - मोहल्ला मिलके घाट पर इकट्ठे पूजा करेला । ई परब सामूहिकता, सामाजिक एकजुटता के अद्भुत प्रतीक हवे ।

छठ पर्व प्रकृति आ मानव के मेल के पर्व हवे । ई पर्व प्रकृति के प्रति, आस्था, श्रद्धा, प्रेम, लगाव आ आभार प्रकट करे के पर्व ह । सूरज, जल, वायु आ धरती – जेकरा बिना जीवन संभव नइखे – ओकरा के प्रणाम करे, आदर देवे आ आभार करे के पर्व हवे । छठ ना सिर्फ पूजा - पाठ बलुक अनुशासन, शुद्धता, आस्था, आ पर्यावरण बचावे ओके स्वच्छ बनाए रखे के पर्व हवे । ई पर्व में लोग नदी - तालाब, गंगा घाट के साफ - सफाई करेला, घाट सजावेला, जेकरा से पर्यावरण के रक्षा होला। डूबते आ उगते सूरज के अर्घ देके मनुष्य जीवन के लय आ प्रकृति के चक्र के प्रति विश्वास प्रकट करेला । छठी मइया आ सूरज देवता से प्रार्थना कइल जाला कि सभे के जीवन में सुख, शांति आ समृद्धि आवे ।

उगत सूरज के त सगरी दुनिया प्रणाम करेला, बाकिर डूबत सूरज के प्रणाम करे के छठी मइया के परब ही सिखवले बा । इ परब सिखवेला कि जीवन के ढलान, कठिनाई आ हार के भी आदर कइल चाहीं । जेकरा से रउरा लाभ मिलल, ओकरा विदाई के घड़ी में “धन्यवाद” कहला से बड़का जीवन मूल्य कुछ ना बा । इ परब जीवन में कृतज्ञता, स्वीकार्यता आ विनम्रता के मूल्य सीखवेला ।

छठ पर्व अद्वितीय बा काहे कि एह में डूबत सूरज के भी अर्घ्य देवल जाला । एह में बहुत गहिर संदेश छिपल बा कि सम्मान ओकरा के भी देवे के चाहीं जे आपन योगदान दे चुकल बा । सूरज दिन भर प्रकाश आ उर्जा देवेला, त ओकरा विदा होते घड़ी भी कृतज्ञता जतावे के चाहीं । जीवन में ढलान, हार आ बुढ़ापा के भी मान - सम्मान दीहल चाहीं । ई छठ पर्व मनुष्य के सिखवेला कि खाली सफलता (उगत सुरुज) के ना, बलुक संघर्ष आ ढलान (डूबत सुरुज) के भी आदर करल जरूरी बा ।

भोर में उगते सूरज के प्रणाम आ अर्घ्य जीवन में आशा, उमंग आ नवा अवसर के प्रतीक हवे । रात अंधियार आ कठिनाई के बाद नया दिन जरूर आवेला । छठ एह

विश्वास के मजबूत करेला कि जीवन चाहे जतना कठिन होखे, उगता सूरज नियन नवा मौका जरूर मिलेला ।

इ परब जीवन में आशा, संघर्ष शक्ति, नवा शुरुआत के उमंग के संदेश देला । जीवन में अगर ढलान बा त उगान भी बा । सांझा आ प्रभाती के सूर्य पूजन और अर्घ्य जीवन में आभार, धैर्य, आशा आ संतुलन के अद्भुत प्रतीक ह ।

जीवन में कृतज्ञता, धैर्य, आशा, संतुलन, अनुशासन, शुद्धता, पवित्रता आ सामूहिकता के पाठ पढ़ावे वाला इ पावन पर्व सबके जीवन में खुशहाली , समृद्धि आ शांति लावे एह आशा और विश्वास के साथ छठ पर्व के अनघा बधाई ।

आरती पाण्डेय
शोधार्थी (हिंदी साहित्य)
जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया

गोवर्धन पूजा अऊर भइया दूज

हमनी के परम्परा , हमनी के संस्कृति अऊर त्योहार अपना भीतरी एगो नवका संचार के अनुभूति करावेला ।

प्रेम अऊर सौहार्द के संदेश देला एकरे वजह से हमनी के एक दूसरा से जुड़ल रहेनीजा अऊरी याद करेनी जा ।

गोवर्धन पूजा दिवाली के बाद कार्तिक शुक्ल पक्ष के प्रतिपदा तिथि के मनावल जाला । ऐही दिने गोवर्धन अऊर भगवान श्री कृष्ण के पूजा कइल जाला । अऊरी एकरा के अन्नकूट के परब के रूप मैं भी मनावल जाला ।

भाई दूज कार्तिक शुक्ल पक्ष के द्वितीया तिथि के मनावल जाला , यानि गोवर्धन पूजा के अगिला दिने ।

भाई - बहिन के पवित्र रिश्ता के समर्पित ई त्योहार ह । बहिन लोग आपन - आपन भाई के तिलक लगावेली अऊरी उनकर सुखी आ लंबा जीवन के प्रार्थना करेली ।

एकरा के भैयादूज, भाऊबीज, भातृद्वितीया के नाम से भी जानल जाला । पौराणिक कथा के अनुसार देवराज इन्द्र अंहकार में ब्रजवासियन पर मूसलाधार बरखा क के कहर बरपावत रहलन । भगवान श्री कृष्ण इन्द्र के ई क्रोध से ब्रजवासियन अउरी पशुअन के रक्षा करेके खातिर गोवर्धन पहाड़ के आपन तर्जनी अंगुरी पर उठाके ओकरा नीचे सबका के शरण देके इन्द्र के प्रकोप से सुरक्षित क देहलन ।

इहे घटना से ब्रजवासियन के प्रकृति के महत्ता के एहसास भइल अऊरी ऊंहा के सब लोग गोवर्धन पहाड़ के पूजा करे लगले ।

एही दिने कई तरह के अन्न से भगवान के भोग लगावल जाला अऊरी कृष्ण अऊर गोवर्धन पहाड़ के आसपास परिक्रमा कइल जाला । अऊरी जवन लोग गोवर्धन के पास ना पहुंच पावेलन उ लोग गाय माता के पूजा कर लेलन गोवर्धन के रूप मानके ।

ई त्योहार प्रकृति के प्रति कृतज्ञता के भी प्रतीक हवे ।

भइया दूज मनावे के पीछे भी एगो पौराणिक कथा कहल जाला सूर्य देव के पत्नी छाया के पुत्र यमराज अऊर पुत्री यमुना हवें । यमराज आपन बहिन यमुना से बहुत स्नेह करत रहलन । यमुना आपन भाई यमराज के कई बार अपना घरे आवे के नेवता देत रहली, लेकिन उ आपन काम में व्यस्त होखे के कारन ना आवत रहलन , आखिर कार्तिक महिना के शुक्ल पक्ष के द्वितीया तिथि के दिन यमराज आपन बहिन यमुना के घरे गइलन, यमुना आपन भाई के आपन घर में आइल देख के बहुत खुश भइली , उ आपन भाई के खुब आदर सत्कार कइली । उनका पसंद के भोजन करइली अऊरी तिलक लगाके उनका खुशहाली के कामना कइली ।

यमुना के ई सत्कार से यमराज बहुत प्रसन्न भइलन अऊरी यमुना से वर मांगे के कहलन । यमुना , यमराज से कहली की उ हर साल ई शुभ तिथि पर उनका घरे अइहन अऊरी भोजन करिहन अऊर उ ई वरदान देस की जवन भाई आपन बहिन के घरे आके तिलक लगवइन उनकर अकाल मृत्यु के भय ना रही ।

यमराज, यमुना के बात मान लिहलन अऊरी उनका के आशीष देहलन तबे से भाई - दूज के परब मनावे के प्रचलन शुरू भइल , जवना के यमद्वितीया भी कहल जाला ।

आजो गोवर्धन पूजा अऊर भाई दूज के पर्व हर साल बहुत धूमधाम से मनावल जाला काहें कि हमनी के अपना संस्कृति के आपन दिल में बसाके रखेनीजा अऊरी बहुते श्रद्धा से मनावेली जा ।

अर्चना श्रीवास्तव
नोएडा-सेक्टर 70

कईसे अइली भारत में लक्ष्मी जी ?

भारत में ही ना, एह संसार के कई देशन में धन आ ऐश्वर्य के देवी के रुप में लक्ष्मी जी के पूजा कइल जाला ।बाकिर हमनी में बहुते कम लोगन के मालूम बा कि अपना देश में लक्ष्मी जी कब अउरी कहां से अईली ?

भारत में लक्ष्मी जी के अयिला के "ब्रह्मवैवर्त पुराण" में एगो रोचक कथा के वर्णन भईल बा । एह कथा में ई बात कहल बा कि एक बेर सरस्वती जी के मन में ए बात के संका भईल कि विष्णु जी उनकर उपेक्षा कईके गंगा जी के अधिक आदर देत बाड़े । ई बात सोची के गंगा जी खातिर सरस्वती जी के मन में इरिसा जागि गईल ।

एक दिन जब विष्णु जी गंगा जी से प्रेम से बतियावत रहले त इ देखि के सरस्वती जी गंगा जी खातिर अपमान से भरल बात कहि दिहली । ई सब बात लक्ष्मी जी भी सुनत रहली । लक्ष्मी जी सरस्वती जी से कहली कि तोहरा गंगा जी से अइसन बात ना कहल चाहत रहल ह । लक्ष्मी जी के बात सुनि के सरस्वती जी बहुते खिसिया गयिली आ खिसिया के लक्ष्मी जी से कहली कि तुहूं ओहि राह पर चल तारू । आखिर तुहूं त हमार सवतिन ही हऊ । सवतिन से सही बात के उमेदि ना कईल जा सकेला । सवतिन त माटी के भी खराबे होले ।

ई सब बात विष्णु जी भी सुनत रहले । विष्णु जी सरस्वती जी के मन में आइल शक के दूर कइल चाहत रहले । विष्णु जी के बात सुनि के सरस्वती जी के मन ई बात आ गईल कि विष्णु जी जरला पर नमक छिड़कत बाड़े । सरस्वती जी अउरी अधिका खिसिया गईली आ लक्ष्मी जी तथा गंगा जी के सराप देत कहली कि लक्ष्मी तु वृक्ष के रूप में हो जा । तब लक्ष्मी जी गंगा जी के सराप से बचावे खातिर सरस्वती से विनती कयिली । एसे नाराज होके सरस्वती जी दुबारा सराप दे दीहली । इ सराप सुनि के लक्ष्मी जी त चुप हो गयिली, बाकिर गंगा जी सरस्वती के एह सराप के सहि ना पवली अउरी गंगा जी भी सरस्वती के नदी के रूप में हो जाये के सराप दे दीहली आ कहली कि तु मृत्यु लोक में जाके रहीह, जहवां पापी लोग तहरा में नहा के आपन पाप तहरा के देत रहीहें ।

गंगा जी के सराप के सुनि के सरस्वती जी अउरी अधिका खिसिया गईली आ गंगा जी के फेरू से सराप दिहली कि यदि हम मृत्यु लोक में रहब त तु श्री विष्णु के प्रेम अकेले ना पइबु । तुहूं नदी के रूप में ही मृत्यु लोक में जाके बहबू आ पापी लोगन के पाप के अपना में मिला के उनकर उद्धार करबू ।

जब विष्णुजी देखले कि तीनों देवी लोगन के क्रोध कुछ कम हो गइल त विष्णु जी बोलले कि हे देवी लोग ! सुन लोग ! अलग - अलग स्वभाव आ रूचि वाली कई स्त्री लोगन के वेद के मर्यादा के अनुसार कबहूं एक संगे ना रहे के चाहीं । काहें कि यदि कई स्त्री लोग एक साथ रहेला लो त आपस में एक दूसरा के गुण - दोष निकालत रहे ला लो । एही से गंगा शिव जी के पास, सरस्वती ब्रह्मा जी के पास आ लक्ष्मी हमरा पास रहिहें ।

विष्णु जी के ई बात सुनि के सरस्वती जी कहली कि हे भगवान ! लक्ष्मी जी ही रउरा संगे काहें रहिहें । हम आ गंगा जी काहें ना रहिहें । सरस्वती के ई बात सुनि के विष्णु जी कहले कि लक्ष्मी में तनकियो क्रोध नईखे । उनकर स्वभाव एक दम शांत ह । लक्ष्मी हमेशा हमरा सेवा में लागल रहेली आ धरम के आचरण करे वाली पत्नी हईं ।

विष्णु जी के ई बात सुनि के तीनों देवियां आपस में लिपटि के रोवे लगली आ अपना कइला व्यवहार पर पछताए लगली । सरस्वती कहली," हे प्रभू ! हमरा जइसन दुष्ट विचार वाली ही अईसन कलह खड़ा कइलस ह । तबो रउंआ हमरा के त्याग मति करीं, ना त रउरा वियोग में हम आपन प्राण त्याग देब । लक्ष्मी भी भावुक होके बोलली कि "हे भगवान ! रउंआ सबके एक निगाह से देखे के चाहीं । रउंआ गंगा के शिव जी के पास आ सरस्वती के ब्रह्मा जी के पास जाए के ना कहे के चाहीं । रउंआ अपना बात पर फेरू से विचार करीं, नात हमहूं अन्न - जल त्यागि के मरे के व्रत ले लेबि ।

जब विष्णुजी देखले कि अब तीनों देवी लोग एकमत हो गईल बा लोग त तीनों देवी लोगन के समझवले कि अब तोंहनलो निश्चिंत हो के जा लो । तोहनलों के आ अपना बचन के लाज राखे खातिर तोंहनलो संगे बराबर के भाव राखबि । एह नया रूप में सरस्वती एक अंश में भारत में ज्ञान , बुद्धि आ विद्या के देवी के रूप में रहिहें , जवन हमरे अंश के रूप में रही आ एक अंश के रूप में ब्रह्मा के पास रहबु । गंगा भी एक अंश के रूप में शिव के पास रहिहें आ नदी रूप के अंश में पापी लोगन के पाप के नाश करिहें । एही तरह लक्ष्मी भी एक अंश के रूप में भारत में रहिहें आ एक अंश के रूप

में हमरा पास रहिहें । ए तरह से लक्ष्मी भारत में धन - धान्य आ ऐश्वर्य की देवी के रूप में रहिहें । तबे से लक्ष्मी भारत में धन - धान्य आ ऐश्वर्य के देवी के रूप में रहेली आ धन - धान्य अउरी ऐश्वर्य के देवी के रूप में इनकर पूजा - अर्चना धूम - धाम से कईल जाला । दीपावली के समय त लक्ष्मी पूजा विशेष रूप से कईल जाला ।

डॉ गणेश पाठक

दशहरा परब

दशहरा परब हमनी के सनातन संस्कृति के सबले बड़का अउर खास परबन में से एक ह । दशहरा हमन के दुगो परंपरा से जुड़ल बा – एगो "शक्ति की पूजा" से , आउर दुसरका "राम (रामत्व) के विजय" वाली परंपरा से । एक ओर जहाँ महिषासुर जइसन आसुरी प्रवृत्ति प आत्मिक शक्ति से जीत के खुशी मनावल जाला , त दुसर ओर रावण जइसन अहंकारी, असत्य के राहि प चले वाला आ अन्यायी पर "राम" और रामत्व के , सत्य के विजय के उल्लास मनावल जाला । एही से ए परब के "विजयादशमी" और "विजय पर्व" भी कहल जाला ।

पौराणिक कथा - पुराण में एकर की गो संदर्भ मिलेला, बाकिर साहित्य के नजरी से निराला जी के रचना "राम की शक्ति पूजा" बहुते प्रसिद्ध साहित्यिक रचना ह । कुल मिला के ई परब "शक्ति से शक्तिमान बने" के सिद्धांत ह । महिषासुर आ रावण के बध के कहानी हमनी के ना खलिसा मनोरंजन करावेला , बल्कि सिद्धांत के समझे अउर जीवन में ओह सिद्धांत के उतारे के सुनहरा मौका भी देला । एहीसे हमनी के बड़ बुजुर्ग, विद्वान लोग ई परब - त्योहारन के परंपरा में जोड़ के रखले बाड़न , ताकि आवे वाली पीढ़ी एकर गूढ़ भाव समझ के समाज अउर जीवन में उतार सके ।

बालपन में ई सब परब बस तड़क - भड़क, मीठा - मिठाई आउर खेल के रूप में लागेला, बाकिर समझदार लोग खातिर ई शोध, विवेचन अउर आत्म - मूल्यांकन के समय ह । हमनी के घर - परिवार में ई परब के सिद्धांत पक्ष प गंभीर चर्चा होखे लागी , तबे जाके ई परब के असली मतलब समझ में आई । नाहीं त ई बस छोट लइकन वाला खेल तमाशा बन के रह जाई ।

दशहरा: मूल्यांकन के दिन ह

दशहरा के मतलब बा आपन खुद के आचरण के जांच परख करे के दिन । ई परब हमनी के सिखावेला कि पिछला एक बरिस में हमनी के का आचरण कइनी जा ? यदि हमनी के मर्यादा , नीति अउर देशहित में चलनी त समुझ लीं कि सही माने में दशहरा मनवनी । नाहीं त ई बस लइकन वाला खेल भर बा, एकरा से अधिका ना ।

बड़ बुजुर्ग आदमी के बालबुद्धि राखल बड़ा शर्म के बात होखेला । बड़प्पन और इज्जत तबे मिली जब हमनी के पूड़ी, पकवान, कपड़ा आउर पटाखा से आगे बढ़ के विचार, सुमति अउर विवेक के प्रकाश में शास्त्रीय, मर्यादित आउर देशहित वाला व्यवहार करीं ।

"राम" आउर "रामत्व", "रावण" आउर "रावणत्व" के फर्क समझे के बहुते जरूरत बा । जब ई फर्क साफ होई , तबे ई दशहरा परब असली रूप में हमनी के भारतीय संस्कृति के विकास के कारण बन सकेला, आपन औचित्य सिद्ध क सकेला ।

असली चिंतन, विचार से हमनी के देश में भौतिक आउर आध्यात्मिक विकास के संतुलन बनत जाई अउर भारत फेरू से "सोने के चिरई" बन सकेला, एकरा में कवनो संदेह नइखे । एह खातिर जरूरी बा कि दशहरा के "रामत्व" , "शिवत्व" आउर "शक्ति" के औचित्य से जोड़ के मनावल जाव ।

शक्ति अउर शक्तिमान

"शक्ति" का ह ?– ई सत्य, विचार, मूल्य, संवेदना, न्याय आउर आचरण के शक्ति के प्रतीक ह । एह शक्ति के स्थापन खातिर शास्त्र (ज्ञान) आउर शस्त्र (बल) दुनों बहुती जरूरी बा । शास्त्र आउर शस्त्र एकही सिक्का के दू पहलु ह ।

आजु शस्त्र - पूजा राजपूत आउर क्षत्रिय समाज तक सीमित बा जबकि पहिले सब वर्ण में ई परंपरा विद्यमान रहे । परशुराम , विश्वामित्र आउर भृगु जइसन मनीषी लोग एह परंपरा के जीवंत उदाहरण हवे । जब से हमनी शास्त्र आउर शस्त्र के साथ छोड़ दीहनी, तब से हमनी के पतन , पराभव शुरू हो गइल । एहीसे ई जरूरी बा कि हमनी ई दुनों चीज के अपनाईं जा ।

अगर राजनीति के चशमा से ना देखल जाव , त "अग्निवीर योजना" ए संदर्भ में एगो बढ़िया और सराहनीय कदम ह; जहाँ शिक्षा के बाद 4 साल के सैनिक प्रशिक्षण अउर प्राप्त धनराशि से युवक स्वावलंबी बन सकत बा । लेकिन अफसोस कि एकरा के राजनीतिक स्वार्थ खातिर बहुते बदनाम कर देहल गइल बा । आजुओ बहुत कम लोग एकर समर्थन करता ।

ई चीज दशहरा जइसन महापर्व के अपमान ह । "भय बिनु होय न प्रीत" आउर " भय काहू को देट नहि, नहि भय मानत काहू" वाली उक्ति, आदर्श जीवन यापन के बहुत बढ़िया तरीका ह । "शास्त्र के ज्ञान" आउर "शस्त्र के बल से" ई आसानी से संभव बा । जब तक एह परब में "माला अउर भाला" , "शास्त्र आउर शस्त्र", "मीरी-पीरी" के मेल ना होई, तब तक ई बस लइकन के खेल बन के रह जाई ।

एहीसे ई परब के राष्ट्र निर्माण आउर सांस्कृतिक पुनर्जागरण के साधन बनावल जरूरी बा । रामलीला के आयोजन के मकसद भी ई रहे कि छोट - छोट लइकने के मनोरंजन भी होखे आउर बड़का लोग के अंदर के बुद्धि, चेतना जागे ।

पुतला दहन

दशहरा पर विचार - विमर्श के बाद सही - गलत , उचित - अनुचित के भेद समझला पर पुतला दहन के कार्यक्रम होला । बाकिर सवाल बा , केकरा पुतला के जरावल जाव ? काहे जरावल जाव ?

अगर ई बात सही से ना समझल गइल , त पुतला दहन प्रकरण खाली तमाशा बन के रह जाई । दस साल पहिले गायत्री परिवार लखनऊ में "दहेज दानव" के पुतला फूंकले रहे, बाकिर फेर कहीं दुबारा अइसन ना देखे के मिलल । आजु जरूरत बा कि हमनी क अपनो भीतर के बुराई के पुतला फूंकीं जा । अगर हमनी के ईमानदारी से आपन बुराई सबके सामने लाके उनका के जलाईं जा , आउर फेर से ओकरा के ना दोहरावे के कसम खाईं जा, त ई सबसे बड़हन सामाजिक पुण्य के काम होई ।

हमनी के शास्त्रीय परब के शास्त्रीय तरीका से मनावे के चाहीं । ई हमनी के चरित्रवान, जिम्मेदार आउर कर्तव्यनिष्ठ बनावेला । यदि एह तरह ना भइल त हमनी के शिक्षित होखला के बावजूद रीढ़ विहीन जीव बन जाईब जा । बिना विवेक के "मानव बम" जइसन घातक आदमी बन जाइब जा , जे धन आउर मजहब खातिर कठपुतली बन के आजुओ नाचत बा । धियान राखीं – धन के ई बड़का लालच आउर भोग के इच्छा कहीं हमनी के संस्कृति विरोधी, देशद्रोही ना बना देव ।

निष्कर्ष

हर परब के एगो निश्चित विशेष उद्देश्य होला । हमनी के ओकरे गूढ़ मतलब , दर्शन अउर नीयत के समझे के जरूरत बा । ई दसहरा परब भी खाली पुतला जलावे , मिठाई खाए, अउर छुट्टी मनावे के दिन ना हवे । चलीं आजु एकजुट होके , संकल्प लेके एकर असली उद्देश्य पूरा करे में लाग जाईं जा । इहे ए परब के असली उद्देश्य हवे और उद्देश्य पूरा कइल हमनी के सामूहिक जिम्मेदारी ।

डॉ॰ जयप्रकाश तिवारी

भरसर, बलिया ।

जिउतिया

आसमान से हल्का बुंदाबुंदी, चौपाई बयार के संगे पुस के महीना अंतिम चरण में रहे ! लगभग दस दिन से सुरुज महाराज कबहूँ कुहासा त कबहूँ बदरी से तोपाइल , धरती पर आपन नजर ना फेरले रहले ! हाड़ कंपावे वाला ठंड़ी के असर नवका लोग के भी जेकर खून अभीन गरम बा, रजाई में लुकाये के मजबूर कर देला तऽ सोचीं जे पुरान हो गइल बा ओकर का हाल होई ?

नटवर के माई घर के ओसारा में एगो कोना पलास्टिक के चटाई पर बिछावल दोहरा बिछावन पर बइठ के थर - थर कांपत रहली ! ओढ़े के तऽ उ विदेश से आइल अरबियन कामरा ओढ़ले रहली , बाकिर पुरनिया देह खातिर उहो कामरा साइत कम पड़त रहे ! उ मने मन इहे सोचते रहली कि पलानी , से खपरैल ले, फेरु जब खपरैल से छत वाला मकान भइल तबहुं जिनगी में अइसन ठंढी कबहूँ ना आइल रहे ! का जाने इ हमरा उमिर के दोस बा कि सांचो एतना हाड़ कंपावे वाला ठंढी आइल बा !

पहिले के समय में गाँव आजु के जइसन ना रहे ! गाँव - गाँव में जाड़ा के दिन में सभका दुअरा पर घुर , आउर बहिन महतारी खातिर आंगन में बोरसी के जरुर बेवस्था रहे ! आपन छोटा मोटा काम ओरवाई के सभे घुर चाहे बोरसी के चारो ओर गोलाईं में बइठ के ठंढी भगावे ! ओढ़ना के नाम पर पुरान धोती साड़ी के तहिया के, मोटका डोरा से सीयल गुदरी ही ओह समय के रजाई रहे! असली रजाई त केहुवे केहुवे के घरे रहे ! केहु - केहु के घरे पिटुआ कामरा (कंबल) भी रहे जवन भेड़िहार भाई लोग भेंड़ी से उन काट के बनावे लोग ! ठ्ंढ़ी भगावे खातिर घर के कवनो कोना में जमीन पर बिछल पुअरा पेठारी आउर ओही प बिछावन के नाम पर कलकतिया जूट के बोरा , जवन कवनो पुरान धोती चाहे लुगा से ढंकाइल रहे ! कुस चाहे पेठारी से बनल चटाई भी ठंढी में बिछावना के काम करे ! बाकिर जवन भी साधन रहे ओहीसे लोग आपन ठंढी जइसे तइसे काट लेव !

अब त गांव पहिले के गांव से बहुत आगे निकल गइल ! अब मड़ई , पलानी त खतम होखे के किनारा बा ! गांवे गांव बहुते लोग के पक्का मकान , रजवाड़ी गेट, बिजली, पंखा, फ्रीज, हिटर, टी. वी. सब लाग गइल ! घर के फर्श पहिले माटी से पलास्तर आउर अब मार्बल, टाइल्स आउर महंगा पत्थर के जुग ले आ गइल !

नटवर भी जब से सउदी कमाये लगले पुरान घर तुड़वा के चकाचक नवका स्टाइल के घर बनवा लिहले ! घर में मए सहुलियत के सामान लाग गइल !

घर में चूना के जगह व्हाइट पुटी आउर सिमेन्ट और ओकरा उपर पसंद के रंग के पेन्ट पोताइल ! फर्श पर टाइल्स के जगहा सफेद संगमरमर के पत्थर लागल ! कुल मिलाके उनकर घर कवनो शहर के बंगला से कवनो कोना से कम ना रहे ! कमी रहे त इ रहे कि ओ घर में माई खातिर कवनो जगहा ना रहे ! गिन गुंथ के ज गो घर बनल रहे नटवर, आउर उनका बेटन के हिसाब से बनल रहे ! घर के घरभोज होते ही सभे आपन आपन कोठरी छेंक लिहले ! ना नटवर इ सोचले कि माई कहाँ रहीहें ना उनका लरिकन के आपना इया के कवनो फिकिर रहे !

पुस के ओह ठंड़ी में नटवर के माई के बिछावना बहरी ओसारा में हो गइल ! संगमरमर के पत्थर के फर्श पर पलास्टिक के चटाई के उपर एगो दरी नियन मेंही गुदरी बिछा के सउदी से आइल कामरा दे के माई के सुता दियाइल ! जवन संगमरमर के सफेद पत्थर घाम में भी ठंढ़े रहेला उ पुस के ठंढ़ी रात में का रंग देखावत होई ? सुतते फर्श आपन रंग देखावे लागल ! जइसे तइसे आँख लागल बाकिर अधरतिया के पहिलहीं आँख खुल गइल ! नीचे से चटाई गुदरी सब पाला हो गइल रहे ! उ सउदी वाला कामरा के बगल वाला भाग करवट ले के नीचे दबवली ! कुछ आराम मिलल बाकिर तनिक देर बाद फेरु उहो पाला लागे लागल ! रात भर जइसे तइसे उखी - बिखी में बितल ! भोर होते - होते फर्श के बिछावन त बिछावन ह सउदी वाला कामरा भी बुझाव की बरफ हो गइल बा ! उ उठ के बइठ गइली ! बिछावन पर एगो कोना गुटियाके देह गरम करे के कोशिश में लाग गइली ! बाकिर ना उनके देह के दलदली कम होखे ना उनकर दाँत कटकटाइल !

सुबह नटवर जब अंदर से बाहर अइले , माई के दशा देखके फटाफट घर से एगो आउर कामरा लियाके निमन से ओढ़ा दिहले ! देह के आराम मिलल ! जइसे तइसे दिन बितल, गदबेर हो गइल ! नटवर के माई के आपन रात वाला दुरदासा बिसरत ना रहे ! उ आपना बेटा नटवर के बोला के कहली....

"ए बाबु, निचवा बड़ी पाला लागत बा, ना होखे त एह कोनवा तनी पेठारी बिछवा के खटियवा से आड़ कर दिहतऽ ! नीचे से हई पत्थरवा पाला लागत बा आउर उपर से सुपुहा मार के इ कामरा पाला क देता ! "

" का माई ? तुहुं अजबे बात करेलु ! अतना मँहगा पत्थर फर्श पर पुअरा पेठारी बिछावे के लागल बा ! जब पुअरे पेठारी बिछावे के रहीत त इ बनवावला के का फायदा !

तनी तुहीं बतावऽ , लाखो रुपिया लगवाके इ पत्थर लगवअले बानी , खटिया खड़ा कर के इहाँ आड़ कइल जाई, जब खटिया एने ओने खिंचाई त एतना महँगा पत्थर खराब ना होई ?"

नटवर के माई के तब बुझाइल कि उ केतना कम किमती बाड़ी ! नव महिना पेट में ढो के, सगरी दरद पीरा सह के वंश जनमावल जाला ! ना जाने कवन - कवन सपना मार के लरिकन के पोसल जाता , बाकिर उहे लरिका जवान होके सब निक लिप देत बाड़े सन ! बाप महतारी के बुढ़ारी बोझा लागे लागता ! नटवर के माई के बुझा गइल कि लरिकाईं में खिंच खिंच के आंचर ओढ़े वाला नटवर खातिर अब उ काम के चीज नइखी रह गइल !

"ना ए बाबु.. हम त एही से कहनी ह कि पछुआ हलकोरा मारत बा , लागत बा कि लाद में ठंढ़ा मार दी ।"

" ना माई ! पत्थर पर पुअरा थोड़े बिछी ! एगो कामरा अउरी ले लिह , ठंढ़ी ना लागी !

नटवर के माई "ठीक बा" कह के चुप हो गइली ! रात के खाना खइला के बाद सभे अपना अपना घर में सुते चल गइल ! नटवर के माई के एगो अउरी कामरा दिया गइल ! उ तीन तीन गो कामरा ओढ़ के सुत गइली ! पछुआ आपना पुरा रंग में रहे ! ओढ़ना आउर पछुआ में वर्चस्व के लड़ाई होत रहे ! आखिर ओढ़ना पर पछुआ भारी परे लागल ! पछुआ अब कामरा के महीन छेदानी से पार होके नटवर के माई के शरीर छेदे लागल ! उ उठ के बइठ गइली ! ठंढी छाती में समा गइल रहे ! देह काँपे लागल , पेट दलदलाए लागल, दाँत कटकटाये लागल ! उ केतने बार कोशिश कइली कि देह ना हिलो , दाँत जनि कटकटाव, बाकिर बार - बार के कोशिश नाकाम भइल ! उ एक बेरी फेरु से तीनों कामरा देह में लपेट के ओठंग गइली !

पछुआ आउर ओढ़ना के लड़ाई अब ठंढ़ी आउर नटवर के माई के लड़ाई में बदल गइल रहे ! ठंढ़ी उनके हिलावे कंपकंपावे के फेर में रहे, उ अपना के ना हिले देवे के लड़ाई लड़त रहली ! आखिर धीरे - धीरे उ आपन गोड़ लंबा कर के कामरा में गुटिया के सुत गइली !

बिहान होते नटवर घर से बाहर निकलले ! देखले के माई आराम से गोड़ लंबा कर के सुतल बाड़ी ! नटवर ओसारा से बाहर निकल के गांव के गुमटी पर कुछ लेवे चल गइले ! लगभग एक घंटा बाद उ घरे पहुंचले त माई ओसहीं टंगरी लंबा क के सुतल

रहली ! मने मन उ सोंचले कि माई तीन गो कामरा पाके आज आराम से सुतल बिया ! उ आवाज दिहले...

"माई...! ए माई, उठऽ बिहान हो गइल !"

माई कुछउ ना बोलली ! उ फेरु आवाज दिहले...

" ए माई, उठऽ ना... आजु तिन गो कामरा मिलल बा त आराम से सुतल बाड़ु ! कहुवीं नु कि एगो अउरी कामरा ले ल.. ठंढी ना लागी !"

माई फेरु कुछउ ना बोलली !

नटवर आगे बढ़ के माई के जगावे खातिर कामरा खिंचले ! " माई उठऽ... " एगो कामरा उनका हाथ में आ गइल ! माई ना हिलली ! उ घबरा के फेरु ओढ़ना जोर से पकड़ के खिंच ले... "ए माई.. उठऽ ना.. "

पुरा ओढ़ना उनका हाथ में आ गइल ! माई ना हिलली ! अब जवन सोझा रहे उ देख के नटवर अवाक रह गइले ! माई के दाँत पर दाँत कसाइल रहे , आँख बन्द रहे, हाथ खुलल रहे, नाक से एक दू बूंद खून चु के जम गइल रहे ! नटवर के माई ठंढ़ी से आपन लड़ाई हार गइल रहली !

नटवर अब दहाड़ मार - मार के माई - माई कह के रोवे लगले ! उनका लरिकाईं से लेके अभिन तक के सब बात इयाद परे लागल ! जिनगी में जवन मिलल माई के आशीर्वाद से मिलल ! बाकिर अफसोस....!

कुछ देर बाद नटवर काँच बाँस से बनल पचाठी प माई के लाश खातिर पुअरा बिछावत रहले ! काश.. इ पुअरा एक दिन पहिले उ संगमरमर के पत्थर पर बिछा देले रहते त एतना जल्दी पचाठी पर ना बिछावे के पड़ीत !

रामसागर सिंह
कोदई, पचरुखी, सिवान (बिहार)
8156077577

छठ विशेष

लोकमहापरब के सकारात्मक सोच
डूबत सुरुज माने बूढ़-पुरनिया के पूजे के परिपाटी

बिहार-झारखंड से लेके पूरबी उत्तर प्रदेश ले आ देस-विदेस के जवना-जवना कोना-अँतरा में एह इलाका के मनई चहुँपल बाड़न , उहवां-उहवां जन-मन में पइसल लोकपरब छठ के धूम देखते बनेला ।एह लोकपरब के निघिचा आवत कहीं कि सउँसे वातावरन अपने-आप छूमंतर-अस बदलि जाला ।एकाएक लोगन के बात-बेवहार आ विचार में बदलाव लउके लागेला ।आपुस के बैर-भाव भुलाके , एक-दोसरा से मिलि-जुलिके घर-दुआर से लेके गली-कूचा, सड़क-पगडंडी आउर नदी-पोखरा-कुंड-दरियाव के घाटन के साफ-सफाई में सभे बढ़ि-चढ़िके हिस्सा लेबे लागेला ।सड़क छाप गुंडा-मवाली , लंपट आ शहरी दद्दो लोगन के दिल रातोरात बदलि जाला आ सड़क-गली में रोशनी-पानी ,सफाई-सजावट आउर छठ बरत करेवाला नर-नारी के सहजोग-सेवा में उहो लोग मिशनरी भाव से लवसान हो जाला ।रात-बिरात कतहीं आवे-जाए में कवनो डर-भय भा अहस ना लागे ।गहना-गुरिया से लदाइल मेहरारुन के ना केहू छेड़े के जुर्रत करेला , ना छीने-झपटी के कवनो घटना होला ।जनता-जनार्दन के भीड़ के सैलाब जब उमड़ेला , त पुलिसो-प्रशासन कमर कसिके मुस्तैद हो जाला आ सरकारो के धियान अधिका-से-अधिका सुविधा देके शोहरत बटोरे में लागि जाला ।

छठ एहू माने में लोक के महापरब हऽ कि एह में पंडित-पुजारी आ तंतर-मंतर के कवनो जरूरत ना परे आ सरधाभाव से गावल छठी मइया के गीत आउर मरद -मेहरारू के आँतर के भाखल भखौटी , दिल से फूटल बानी पूजा-पाठ आ मनौती बनि जाला ।जापर जाकर सत्य सनेहू, सो तेहि मिले, न कछु संदेहू ' के भाव इहां हू-ब-हू लागू होला ।उगत सुरुज के त सभे अरघ देला , बाकिर इहे एगो अइसन परब बा , जवना में उगत भगवान भास्कर का पहिले अस्ताचलगामी (डूबत)सुरुज के अरघ देके अन्हरिया से अँजोरिया का ओर बढ़ेके सबक दियाला ।
दोसरा माने में , सभसे पहिले डूबत माने बूढ़-पुरनिया , दीन-दुखिया के खोज-खबर लेबे , सेवाटहल करे आउर पूजे के परिपाटी बनल रहे के चाहीं ।

का छोट, का बऽड़,का धनी, का गरीब---सभकरा माथ पर दउरा, देह पर पीयर बहतर, बाकिर गोड़ में जूता-चप्पल किछु ना ।केहू डेगरगर बढ़त बा , त केहू भूँइपरी परत जा रहल बा ।सउंँसे माहौल सरधा, बिसवास आ अध्यात्म का रंग में सराबोर बा ।चारू ओर विनयी भाव से गूँजत छठी मइया के गीत -'काँचहिं बाँस के बहँगिया,बहँगी लचकत जाय/ बाट जे पूछेला बटोहिया,बहँगी केकरा के जाय/ तें का आन्हर बाड़े रे बटोहिया , बहँगी छठीय माई के जाय...!' ई आ अइसने पारंपरिक गीतन में छठी माई के महिमा आ सुरुजदेव से विनती। सउँसे संसार में उजियार भरे के निहोरा।

एकरा पहिलहीं नदी से गंगाजल ले आके घर-दुआर के आ तन-मन के कोना-अंँतरा ले पवित्तर कऽ लिहल गइल बा ।नहाय-खाय का दिने नदी में नहाके अरवा चाउर के भात, बूंँट के दाल, लउका के तरकारी खाके, अगिला दिने खरना में रोटी-खीर के परसादी पाके निरजला छठ भूखेके सात्विकता हासिल कऽ लिहल जाला ।जइसन खइबऽ अन्न, ओइसने होई मन!

इहो बात खास तौर से रेघरिआवे जोग बा कि छठ के मउसम आवते भोजपुरी के फूहर, अश्लील, दुअर्थी गीतन के विदाई हो जाला आ घर-अंँगनई से लेके सड़क पर धमा-चउकड़ी मचावत टेम्पो-ट्रक-बस ले---सभे जगहा खाली छठिए के भक्तिभाव से भरल गीतन के पावन सुर गूंँजे लागेला ।चारू ओर छठी मइया के महिमा आ धरम-करम के अनुगूंँज ।एकरा खातिर केहू के जोर-जबरजस्ती ना होला ।सभ केहू अपना अंतरातमा के पुकार सुनिके अइसन करेला ।भितरे-भीतर एह बात के डरो रहेला कि नियम-कायदा से खेलवाड़ करेवाला के तुरंते एकर खामियाजा भोगे-भुगुते के परि जाला ।सुरुजदेव आ छठी मइया के कोप के भला के शिकार होखल चाही! एही से एह घरी सभे नीमन आ शाकाहारी बनिके सतकरम कइल चाहेला ।जइसन नेति, ओइसन बरक्कत!

जे कवनो कारन से छठ बरत ना करे , ऊहो एह मोका प सेवा आउर सहजोग कइल जरूरी बूझेला ।चउक-चउराहा पर शिविर लगाके ब्रती मेहरारून में केहू नरियर बांँटेला, त केहू अउर फल-फलहरी भा पूजा-पाठ के सरंजाम - अगरबत्ती , दूध वगैरह ।हरेक जगहा सामूहिकता आउर नीमन काम सतकरम के भाव देखते बनेला ।जाकी रही भावना जैसी,छठ मूरत देखी तिन तैसी!

कोरोनावायरस के जवना घरी परकोप रहे ,तबो लोग छठ कइल ना छोड़ल आ मास्क लगा के भा दैहिक दूरी बनाके पूजा कइल ,जवना से कि सभका हित में महामारी बिलाउ।बाकिर एने किछु बरिस से कई गो संभ्रांत लोग नदी-दरियाव के तिरवाहीं गइला का जगहा अपना घरे के छत पर अरघ देत आ रहल बा ।एह तरी भलहीं शारीरिक परेशानी से किछु मुकुती मिलत होखे, बाकिर लोक आउर समूह से जुड़ाव के मकसद भला कहवांँ पूरा होत बा ? महामारी का चलते एक-दू साल के बात किछु अउर रहे ।ओहू कठिन समय में ई पूजा बन्न ना भइल, इहे बऽड़ बात रहे।भितरी भाव इहे रहे कि आखिर छठिए मइया आ सुरुजदेवे नू एह दुनियावी महामारी से मुकुती दियवइहन ! नहाय-खाय,खरना से लेके डूबत ,उगत सुरुज के अरघ दिहला ले - लगातार चार दिन के ई निरजला बरत सभका बस के बात ना होला ,बाकिर छठी माई आ सुरुजेदेव के किरिपा-परताप से लरिका से सेयान ले ,बूढ़ से जवान ले - सभे केहू नेत-धरम , आस्था-बिसवास आउर हँसी-खुशी से लोक के एह महापरब में आपन-आपन भूमिका निबाहेला। सभकर मनोरथो पूरा होला। जै छठी माई,जै दीनानाथ!

मनोरथ पूरन भइला पर कोसिओ भराला आ छठी मइया के किरिपा बरिसवला खातिर आभार परगट कइल जाला।

अगर हमनीं के सालों भर छठ के मानसिकता बनवले रखितीं जा आ डूबत सुरुज लेखा बूढ़-पुरनिया बाप-महतारी के इज्जत-मान दिहितीं जा , त एक-दोसरा से भाई-चारा-मिल्लत के इंसानी भाव बरक्कत पावत रहित, वातावरन कतना पाक-साफ रहित आ साझा संस्कृति में मए बैर-बुराइयन के समूल नाश हो जाइत ।का एह लोकपरब छठ के सकारात्मक सोच आ पाक-साफ वातावरन खाली छठिए-भर सिमटि के रहि जाई?
*

भगवती प्रसाद द्विवेदी
सर्जना, सृजनशील कालोनी, बिस्कुट फैक्ट्री रोड,
निकट मगध आईटीआई, नासरीगंज, दानापुर,
पटना-801 503(बिहार)
चलभाष:9304693031

घीव घोसल रोटी

घूरा हाई स्कूल बोर्ड परीक्षा के परिणाम देखे परधान जी के घरे जात रहले, उनका दुआर पर रिजल्ट वाला अखबार आइल रहे । छोट लड़का सब गाना गावत रहले स ।

के केतना कईले बा पढ़ाई ।
बीस मई के बुझाई ।।
केहू रोई केहू गाई ।
केहू रेल से कटाई ।।

उहां बड़ा भीड़ लागल रहे । एगो लड़का फर्स्ट डिवीजन से पास रहे , ओकरा घरे बाधाव बाजत रहे आ लड्डू बटात रहे । ऊहो आपन रोल नम्बर बतवले । पहिले थर्ड डिवीजन वाला लाईन में देखाईल , ना रहे । फेर , सेकंड डिवीजन वाला लाईन में देखाईल , ओहु में ना रहे । फेर, मन मारि के कहले अब उम्मीद नईखे बाकीर फर्स्ट डिवीजन वाला लाईन में देखीं , ओहू में ना रहे । लोग डांटल कि घूरा , गनौरा भी पास होखे के आस लगवले बाड़े, जो ससुरा, मजूरी कर आ दु पईसा कमो कि घर के खर्ची चली । घूरा मन मसोस के अपना झोपड़ी में आ गईले ।

दस दिन के बाद स्कूल में अंकपत्र आईल , त आस लगवले स्कूल में गईले । क्रॉस लिस्ट में उनकर शिक्षक देखले , ऊ कूल्ह विषय में फेल रहले । उनकर बड़ भाई उनकर पढ़ाई छोड़ा दे ले । उनकर माई , बाप त तीन साल पहिलहीं मर गईल रहे । उनकर बड़ भाई एगो स्कूल में चपरासी रहले । ऊ सोचले कि ना पढ़ी तबहूं सिफारिश कई के कहीं नोकरी लगवा दिआई । बड़ भाई के बियाह हो गईल रहे ।

अब घूरा केहू के घरे, खेत, खलिहान में मजूरी करस । मजूरी ना मिले त दिनभर अपना उमर के लइकन संगे तास खेलस । एक दिन ऊ तास प से उठले त अपना झोपड़ी में अईले, भौजाई पानी भरे कुंआ पर गईल रहली । रसोई घर से हाथ में ही पांच गो रोटी ले ले आ एक कल्छूल तरकारी लेके खाए लगले । अतने में भौजाई आ के देखली कि ई हाबूर हाबूर रोटी भकोसत बाड़े । ऊ रोटी के डबरा उघार के देखली आ आग बबूला होके बोले लगली,"घीव घोसल रोटी रावा भईया खातिर रखले रहनी ह , ऊ दिन भर के थकल हॉंफल अईहे त सूखल रोटी कईसे घोंटिहें । तनिकी सा भी समझदारी नईखे।"

घूरा के खीस बरि गईल, एगो रोटी अभी खा ना पवले रहले, झट से फेंक दे ले आ घर से निकल गईले ।

ऊ सीधे गंगाजी के किनारे आ गईले । कुर्ता, पजामा खोल के किनारे ध देले आ गमछा लपेट के पानी में कूद गईले । किनारे डुबाव ना रहे , कुछ दूर नदी में गईला प पानी अथाह रहे । ऊ डूबे लगले , बाकीर ऊ पंवरे जानत रहले , जब प्राण उभ चुभ करे लागल त हाथ पैर चला के पंवरे लगले । हांफत - हांफत थाह पानी में आके खड़ा हो गईले आ सोचले कि हम बहुते गलत काम करे जात रहनी ह । गंगा मईया बचा ले ली , बाकीर अब हम घर ना लौटब । नदी से बाहर निकल के धीरे - धीरे भींजले गमछा पहिनले एगो पगडंडी पकड़ के चले लगले । गरमी के दिन रहे , गमछा सूख गईल । ऊ एगो रेलवे स्टेशन पर आ गईले । एगो ट्रेन खड़ा रहे , ऊ एगो डिब्बा में घुस गईले । ऊ केहू से पूछबो ना कईले कि ट्रेन काहां जाई ।

ट्रेन के बोगी ठसाठस यात्री से भरल रहे । ऊ निचही बईठ गईले । रात भईल त कुछ लोग खाना खाए लागल, इनको भूख बेजोड़ लगल रहे बाकिर केकरा से मांगस ? मांगे के लूर ना रहे । उनका घर के सब बात इयाद आवत रहे, सोचते - सोचते ऊ सूत गईले । सवेरे नींद खुलल त देखले कि कुछ लोग एगो स्टेशन पर उतरत रहे, त उहो उतर गईले । ई गोरखपुर रेलवे स्टेशन रहे । बाहर निकलले त मालकिन होटल के देख के भूख औरी बेजोड़ हो गईल । होटल के मालकिन से कहले ,"हम बर्तन मांज देत बानी , आसी बासी कुछुओ होखे त खाए के द।" ऊ एगो नौकर से कहली कि ये लड़का के खिआव । ऊ रात के बांचल बासी रोटी आ सब्जी एगो प्लेट में देलस । ऊ खाई के बेकहले होटल के बर्तन मांजे लगले । होटल मालकिन उनका के काम प रख ले ली । लगभग बीस दिन ये ही तरह बीत गईल । एक दिन एगो शिक्षक होटल में खाना खाए अईले । ऊ उनका से पूछले कि होटल में तन्खाह केतना मिलेला । ऊ आपन मुड़ी हिलवले आ कहले कि तय कुछुओ नईखे । ऊ पूछले कि हमरा घरे काम करब ? ऊ मुड़ी हिलवले कि ह । मास्टर साहब कहले कि हम खा लेत बानी त हमरा पीछे चल दीह । मालकिन से पूछीह मत ना त तोहरा के ऊ जाए ना दी । ऊ मास्टर साहब के पीछे लाग गईले ।

मास्टर साहब के घर पे ऊ आ गईले । उनकर परिवार बहुते छोट रहे । मरद , मेहरारू आ एगो उनका से दू तीन साल छोट लड़का रहे । बरामदा में एगो लगहर गाय रहे । मास्टर साहब घर पहुंचते अपना पत्नी से कहले कि ई लड़का के कुछ खिआव , हम

होटल में खाना खा लेले बानी । मास्टर साहब के पत्नी एक प्लेट गरम - गरम हलुआ उनका आगा ध दे ली । हलुआ बहुते स्वादिष्ट रहे । बरामदा में एगो चौकी रहे , ओही पर एगो दरी बिछा के मास्टर साहब के पत्नी कहली कि तोहार इहवे आसन रही , दुनो बेरा गाय के चारा, भूसा गोते के बा । ऊ मास्टर साहब के एगो पुरान धोती आ गमछा दे के कहली कि सटले बाथरूम बा नहा धो ल। इनका नहइला बीस , बाईस दिन भईल रहे । नहईले त मन फ्रेश हो गईल ।

मास्टर साहब के लइका के नाम प्रणव रहे । कुछुए दिन में उनका से घुलमिल गईले । उनका संगे खेलस आ ऊ पढ़े बइठस त संगे बईठस । घूरा के पढ़ाई में रुचि देखि के मास्टर साहब अपना स्कूल से प्राईवेट हाई स्कूल के फॉर्म भरवा दे ले ।

घूरा के घर से भगला के बाद उनकर भाई उनका के आस पास , हितई नतई खोजले । गंगा जी के किनारे उनकर कपड़ा देखि के ऊ समझ गईले कि ई डूब गईल ।

हाई स्कूल के रिजल्ट आईल त घूरा सेकंड डिवीजन से पास हो गईल रहले । मास्टर साहब घूरा के नाम ओंकार लिखवले रहले । ऊ अपने स्कूल में नियमित छात्र के रूप में इंटर में नाम लिखवा दे ले । गाय के खिया के ऊ स्कूल भी जाए लगले ।

घूरा के जीवन के गाड़ी सरपट दौड़त रहे । ऊ इंटरमीडिएट के परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर ले ले । मास्टर साहब एगो डिग्री कॉलेज में बी ए में एडमिशन करा दे ले । मास्टर साहब के लड़का प्रणव सी पी एम टी परीक्षा में अच्छा रैंक ले अईले आ सरकारी मेडिकल कॉलेज में उनकर एडमिशन हो गईल । कुछ बहुत नजदीकी लोग के छोड़ के सब लोग जाने कि घूरा मास्टर साहब के ही बेटा हवे । घूरा मन से पढ़स आ गाय के भी सेवा करस । इनकरा रहला से मास्टर साहब के भी बहुते आराम आ सुख मिले ।

एक दिन मास्टर साहब आई ए एस प्रारंभिक परीक्षा के फॉर्म ले अईले आ कहले,"ओंकार जी, फॉर्म भर के रजिस्ट्री जल्दीये कर दीह ।" घूरा कहले कि बाबूजी ई बड़ा कठिन परीक्षा ह, हमार सकान के नईखे । हम क्लर्क ग्रेड के परीक्षा के तैयारी करत बानी । मास्टर साहब डांट दे ले ,"चुप रह, हीनता के भाव कभी भी मन में ना राखे के चाहीं । आपन लक्ष्य हमेशा ऊंचा राखल जाला।"

ऊ फॉर्म भर के रजिस्ट्री कर दे ले आ जी जान से तैयारी करे लगले । संयोग कहीं , चाहे भाग्य, चाहे घूरा के अथक परिश्रम ऊ प्री परीक्षा , मेन परीक्षा आ इंटरव्यू तीनों स्टेप लांघ के आई ए एस में सलेक्ट हो गईले ।

जांच करे खातिर स्थानीय पुलिस घूरा के गांव गईल आ पुछलस कि ओंकार पुत्र फलाना के कवन घर ह ? गांव के लोग बतावल कि एह नाम के हमरा गांव में केहू हईये नईखे। बाप के नाम पूछत - पूछत पुलिस घूरा के भाई के घर पर पहुंचल । घूरा के भाई फोटो देखि के पहचनले कि ई फोटो त हमरा भाई के बुझाता बाकिर उनकर नाम घूरा रहे आ ऊ गंगाजी में बहुत पहिले डूब के मर गईल बाड़े । पुलिस बतवलस कि उ जीयत बाड़े आ उनकर नाम ओंकार ह । कुछ देर के बाद ओंकार उर्फ घूरा के संगे मास्टर साहब उनका घर पहुंच गईले । घूरा के भाई , भौजाई मास्टर साहब के पैर छू के परनाम कईल लोग । पूरा गांव के खुशी के ठिकाना ना रहे । सब लोग घूरा के घर पे आ गईल आ चर्चा करे लागल "आरे, घूरवा जीयत बा आ कलेक्टर हो गईल बा । मास्टर साहब ओंकार के सफलता के पूरा कहानी सुनवले । घूरा के भौजाई मास्टर साहब आ घूरा के घीव घोसल रोटी आ तीन चार किसीम के सब्जी , खीर खीअवली, बेना हांक के । हालांकि बिजली गांव में आ गईल रहे आ पंखा चलत रहे । घूरा घीव घोसल एगो रोटी अपना बगली में ध लेले आ रोवत रोवत मुस्काए लगले ।

देवकुमार सिंह, पूर्व प्रधानाचार्य,
कात्यायनी कॉलोनी, परिखरा,
तीखमपुर, बलिया, उत्तरप्रदेश

माई के जीव.

साँझहि से आजु उ बहुत खुश रहली... हँ बहुत खुश ! फटाफट हबर - हबर रसोई घर के काम निबटा के , सबके खिया पिया के नौ बजे ले उ अपना खटिया पर ओठंग गइली ! बाकिर उनके आँखिन में नींद कहाँ ? उ बड़ी बेचैनी से घड़ी के बारे बजावे के इंतज़ार करते रहली ! माई के जीव.. बेरी - बेरी खटिया पर उठ के बइठस, बाकिर बारे ना बजल देख के फेरु खटिया पर ओठंग जास ! उ मने मन इहे सोचस... इ घड़ियो नतिया आजु बहुत धीरे चलत बा, ना जाने कब बारे बजी !

आखिर उहो घरी आ गइल ! उ झटपट मोबाइल उठा के अपना करेजा के टुकड़ा के नमर खोजे लगली ! बेचैनी अउर घबराहट एतना कि केहु हमरा से पहिले बबुआ के जनमदिन के बधाई ना दे देवे ! आज बबुआ पूरा पचीस साल के हो गइले !

मोबाइल में नमर डायल करते ओने घंटी बाजल... ट्रिन ट्रिन... ट्रिन ट्रिन... ट्रिन ट्रिन..! बाकिर केहु ना उठावल! उ फेरु से नमर डायल कइली.. ट्रिन ट्रिन... ट्रिन ट्रिन.. ट्रिन ट्रिन ! फेरु केहु ना उठावल !

लागत बा बबुआ सुतल बाटे , दिन भर काम क के हारल थाकल जोर से उंघाई आ गइल होई ! इहे सोच के फेरु एक बेर उहे नमर डायल कइली ! संगहि एह भरोसा के संगे कि मोबाइल के घंटी सुन के बाबू के उंघाई टूट जाई !

घंटी फेरु से बाजे लागल.. ट्रिन ट्रिन... ट्रिन ट्रिन... !

अबकी ओने तीसरा घंटी बाजे के पहिले रिंग बंद हो गइल ! असल में अबकी ओने से फोन काट दियाइल रहे ! लागत बा बबुआ अब जाग गइल बा... माई के जीव ! उ एक बार फेरु फोन लगइली.. रिंग बाजल.. रिंग बाजते ओने से फोन रिसीव भइल ! हेलौ...!

"हँ बाबू, हम तोहार माई बोलत बानी"

"हँ हँ... जानत बानी ! तुहुं का अधरतिया के निन खराब कइले बाड़ु ! तहरो कवनो बात बुझाला ना ?

एह बेरा फोन कर के दिमाग चटले बाड़ु !

" आरे बाबू..! सोचनी हं कि तोहरा जनमदिन के पहिले बधाई.... "

"आरे बधाई.. बधाई... बधाई..! आरे तुं बधाई ना दिहतु त इहां बधाई देवे वाला लोग नइखे ? एही बधाई देवे खातिर तु हमार रात के निन खराब कइले बाड़ु ! हँ एगो बात... भुलाइलो कबहूँ हमरा जरी राती बिराती फोन जनि करिह ! इ आपन बधाई अपने लगे राख.. आउर फोन कट..!

ओने से आवाज आइल बंद हो गइल ! ओने से फोन काट दिहल रहे ! उ फोन ना.... लागल कि कवनो तिलंगी आपने डोर से कट गइल होखे , कवनो चिरई आपन खोंता छोड़ के आसमान के ही आपन घर समझ लिहले होखे ! कवनो फतिंगा जरत दीया के आपन संसार समझ लिहले होखे !

उनकर गोड़ हाथ थहराये लागल ! जइसे कि देह में कहीं कवनो बुत्ता ना बाँचल होखे ! जइसे केहु पहाड़ पर से नीचे ढ़ाह देले होखे ! सांचहु उनके आजु केहू पहाड़ पर से ढ़ाह देले रहे !

रामसागर सिंह,
सिवान, बिहार
8156077577

मीठवा

सबेरे कुहासा से कुछु लउकते नइखे । सगरे धुआँ - धुआँ भइल बा ।ठहरे के चीज नइखे लउकत । हाड़ कँपाए वाला जाड़ बा । ओपर से पछुवा बेआर हहाता । इ जाड़, हाड़ में भाला खनिया छेद के एह पार से ओह पार हो जाता । हाथ - गोड़ में बिच्छी मारतिया । ऐहि में चोट लाग जाता त मन कछमछा जाता । कहीं सरन नइखे । गाँछ बिरिछ सब रोअता । आ ओकरा लोर से धरती माई के आँचरा भींज जाता । ओही भोरे गाय - गोरु के नांद पर बान्हे के बा । घूर फूंके के बा । तनी डोंसवा से ऊबार होई । अपनो देहिया गरमा जाई ।

बड़की फुलवारी में गेड़ छिलाता । जाड़ होइहें चाहे जाड़ के बाप ! गेड़वा छीले त जाहीं के बा । एहघरी घास नईखे मिलत । गेड़वा से गइया दु चलावन ढेर खईहन सन । खईहन स तबे नु दूध होई।

रे.....हे...मी...ठ...वा ! उठ ना ! गेड़ के ना जइबे ? तोरा निसा लागल बा ? उठ ना त मुँह में से ललका पानी गिरावे लागेम । गंड़ासी निकाल । बहर जल्दी । खाए के भर छिपा खइब स आ गेड़ ना ले अइब सन ।

रे..हे...मा...ई...! लेधड़ी के पेठा दिहे । गेड़ के बोझा बड़ी भारी हो जाला । अकेले ना उठी । पतलो ले आवे के बा त सालकिल से पेठा दिहे । ओहि भोर में बिगना उठ जाता । हमहुँ चलेम..। रे ! ते कहाँ जइबे ? हम ऊँख ले आएम..। जो पुअरा में लुको, बड़ी जाड़ बा !

बिगना के माई , रमरतिया के लइका ना होत रहे । त ओह टोला के एगो बाभनिन बतवली कि लइका होइ त बहारन पर बिग दिह सन त उ लइका अखे - अमर हो जाई ! बिगना, मटरूआ के नाती ह । मटरूआ बो , सब दिना अपना बेटियन के एगो - दू गो लइका आपना लगे राखेले । नाती के नाम पर लोग कुछु - कुछु दे देला । आ चोराए - गरिआए के त घोंटिए में पिआवल जाला । रे ! भर छीपा खातरु सन..! धउर सन..गेड़ ले आवे .. बड़की फुलवारी में छिलाता । रोज भोरे - भोरे इहे काथा होखे । अगलो - बगल के गाँव के लोग के आंख एही गेड़ पर बा । आँख मिसत , झुंड में गड़ासी पीटत, डगरी में के गाछ बिरिछ पर गड़ासी चलावत , अपना नोहवा के रंगते - रंगते

फुलवारी कावर जातरी सन । हंसी - ठिठोरी , दउरा - दउरी, बजना - बजनी से जड़वा डेरा जाला । आ गेड़ छिलत - छिलत जाड़वा भाग जाला !

गेड़ छिलाता, ओहिमें सान - मटकी चलता । किसुनवा , जोन्हिया से सट के गेड़ छिलता । ओहिमें बजना - बजनी । एगो दोसरे लीला होता ! गेड़ छिलत में ऊँख चोरावे के अलगे इलिम होला । जे में कि सांपो मरा जास आ लठिओ ना टूटे । एतना बाड़का पलिवार के परवसती खाली कमइले से ना नू होला ? जे मुँह चीरले बा उहे नू पेटो भरेला ! एकरा के चोरी ना कहल जाला, इ त जलम के अधार बा ।

ऊँख छिलत, बजना - बजनी करत काली माई आवता लोग ! ओकनी से केहु जीती ? गारी देवे में, चोरावे में, लबरियावे में ? सब गुन के आगर बाड़ी सन । मटरूआ बो, किरिन निहारतिया । अभी ले गेड़ ना आइल । ई कहवाँ रह गइली सन.."महतरिया" कुली ? "हमरा बापवा के मउगी"   ? "भउजी लोगिन, हमरा भइयवा के मेहरारू.."   ? काहंवा रह गइलु स रे ? आव सन, तोनी के मुँह से आज लालका पानी गिरावतानी । मीठवा के गेड़ अभी मुड़िए पर बा । मटरूआ बहु ओकर झोंटा खींच के छानी में बान्ह के आ दूनू हाथ थुनी में बान्ह के, गेड़ में के चोरावल ऊँखी से लागल मरमत करे । बेसवा सन ! तोनी के जवानी के हावा लागल बा   ? ऊंखिए- ऊंखिए एतना मरलस । लोग बाग आ के छोड़इलस । बुझाए कि अब मीठवा ना बची !

मटरूआ बो के आठ गो बेटी बाड़ी सन । दुगो बेटी पर से बेटा भइल त लोग कहल कोठी उलटवा ले । बड़ा नीमन बेटा - बेटी के सारधा पुर गइल बा । मटरूआ बो , लागल गरियावे - "रे कवन हामार खरची चलावता रे.. ? पलिवार देख के सिहातरे सन.. । तेतना बनिहारी भागवान के देले होखब तेतना मिलबे नू करी । आठ गो बेटी बाड़ी सन त आठ गो बेटा जलमा के ए नगर के देखा देब । रे काहाँ बाड़ु स रे   ? भर छिपा खालु सन आ हइ धुरूपवा बो के गरियावे में तोनी के जीभिया में कंसर हो गइल बा ? गरियाव स ना रे सौतिनिया ! सब गोड़ी मिल के धुरूप काकी के गारी से तोपे तोप क देली सन।

घास गढ़त में, लकड़ी काटत में, भईंस चरावत में, बिपती के बड़ा मजा आवेला । सब छवारिक सन से मटका मटकी होत रहेला । ओहि में आजुकाल के मोभाइल त अउरी नाया - नाया राहता देखावता । भईंस खोल के , बकरी खोल के, दोसरा के खेत में बेला के

अपने मोभाइलवासल बाड़ी सन । चोकटा के सारी गहूँ भंईस आ बकरी मिलके चर गइले सन । चोकटा बो, रोवत कलपत मटरूआ बो के ओरहन देवे आइल ।

सब गोड़ा एकवट गइले सन । हम किरिया खातानी ! हामार माल खेत में ना गइल ह । उ त सरेह में चरत रहल । हम दुबर बानी ओहिसे हमरा के झूठे ओरहन दे तारे सन । सब गोड़ा एकाठा हो के चोकटा बो के मारे लगलेन सन । अकेले चोकटा बो, आ एकनी के महतारी बेटी मिलके नव गरह, ओकर हडी - गुडी बाराबर क देली सन ।

बेचारी चोकटा बो रोवतो रहे आ संघे - संघे कथो कहत रहे । कथवा के कहला में लोरवा सूख जात रहे ।

मटरूआ के बेटी चोरी आ सीनाजोरी में फस कालास बाडी सन ! कहीं से केरा के घवद काट के, कहीं आम - लीची तूर के एकछन में अलोपित क दिहन सन ! जेतना बगइचा वाला के घर में आम ना होई, ओकरा से बेसी एकनी के घर में जमकल रहेला ! सब अहुनाई - पहुनाई पेठावल जाला ।

केहु ओरहन दी त कहिहन स - " हे बउधी भगउती ! हामरा के झुठे अकलंक लगावतारे सन । एकनी के घर में भुखइले अइह आ अघइले जईह ।"

सरकार एतना मदद करतिया लेकिन पढे - लिखे से कौनो नाता नइखे । पढ़े में पइसो त लागता , आ इ रोजगार त रोज के बा । पढ़ के भमिरा होके का होई ? बाभन लोग कींहा कोक - सास्तर पढ़ के उपास पड़ता लोग । हमनी के गँवारे बानी सन तबो घर में सगरी चीज भरल बा ।

भोरहीं में, अभी अन्हारे रहेला तबे मटरूआ बो नादा पर भंईस बान्हेले । आ भंईसिया - गइया से कहेले - ऐ धीरा....! धीरा...! पहिले त इ बात हमरा बुझइबे ना करे , बाकिर अब बुझाला कि धी...रा..माने - धीरे । मलवा - गोरूआ के धीरा मने अहथिर रहे के कहेले । साएद भंईसिया - गोरूआ मटरूआ बो के बात सुनके अहथिर हो जाले सन । अपने घुरा तर बइठल रहेले आ हांक लगावत रहे ले - रे....ले...ध...ड़ी ! छांटी डाल । हरमेसा हंकड़ते रहेले । काली माई के रुप में धरती पर जलम लेले बिया । हरमेसा गरजत रही आ ओकरा से केहु पूछ दी - ए मीठवा के मतारी ! का हाल - चाल बा ? ओकर कंठे निमुन हो जाला । कोंहरे लागेले । मुंह से बोलिए ना निकलेला । गने - गने

कही - "ए मी...ठ...वा... ! रे एक लोटा पानी दे"। पानी पी तब ओकरा कंठ में पारान आई । तब जा के बताई - "का कहीं ए काकी ! ओ टोला के एगो बाभनीन हामरा के डाइन कहि देले बाड़ी । अन ओर ताकले नइखे जात" । जइसे काकी उंहा से हटिहन तइसे लोटा - गिलास में चाह उझिलाए लागी । "रे.. मी...ठ...वा..! हामरा के खालिस दूध में चाह बनइहे । तोनी के सुअर के खोभार बाड़ू सन, आपन अलगे बनइह सन"।

"मीठवा" करिया बिया, ओहि से ओकर नाम करिया मीठा धराइल.."करिया मीठा बारे, पाई ना बिकाई घरे जाई"। करिया मीठा कहते कहते ओकर छोटहीं से दुलार के नाम मीठवा हो गइल । "लेधड़ी" पाँच बरिस ले चलबे ना कइलस त लेधड़ी नाम धरा गइल । "बिपतिया" बड़ा बिपत में भइल रहे.. मटरूआ बो के टी.बी हो गइल रहे । ऐहि से ओकर नाम बिपतिया रखाइल ।

ओहि तरे अन्हिया , तुफनिया, बिगना, फेंकनी, ढेलवा..जस गुन तस नाम ! ढेलवा बउनी रहे, अन्हिया आन्ही में, आ तुफनिया के बेर जेठ के बड़की आन्ही तुफान आइल रहे । असपताले जात बेरा पेड़े में रेस्का पर तुफनिया के जलम भइल ।

आठ गो बेटा गांव - नगर के देखावे खातिर मटरूआ बो " पुरइनिया के भगौ ती" के लगे केतना बेर नचले बिया, केतना बेर बकले बिया । माने नगर के आठ गो बेटा जलमा के ना देखा सकलस । भागवान ओकर मिनती ना सुनलन । गांव नगर के लोग ओकर आठ गो बेटा देखे खतिरा आजुवो ओतने पेंड़ा जोहता । भगवान के लगे केकर चलेला !

डॉ सुशीला ओझा

चुप्प बुरबक.

छुटन : का रे मंगला ई तोहार सुपुत्र कहां बारे ?
मंगला : (मंगला चुहानी लिपत जवाब देहली) होई एही कहीं, चमकिलिया (बिल्लू की बहिन) जोरे खेलतऽ होई ।

छुटन : का करि हम ई अमानुष के, समझा के थाक गइल बानि, जइसन माई ओहिसन बेटा । दुनो ढ़ीढ़
बलवंत (बिल्लू) के बाबू, खीझते हुए हाट चल गइले ।

बिल्लू : ए माई केने बारू हो...?

मंगला : का रे बबुआ, केने रहलअ हा, बाबूजी खोजत रहले, आखाड़ा जाए खाती ।

बिल्लू : ए माई केतना बेरा कहनी, हमरा से कुश्ती ना होई । हमरा बड़ होके मेकअप आर्टिस्ट बने के बा ।

मंगला : ह बबुआ, जऊन मन होई ऊ बन ।

बिल्लू : (चहकते हुए रूक के) पर बाबूजी, माई ?
मंगला : समय आवे पर सब सही होई, जाई, तोहार बहिन केने बिया बबुआ, बाबूजी कहले हा, सिलाई सेंटर में दाखिला करवावे खातिर ।
बिल्लू : हकबकाके बोलले, एनही कहीं होई
मन में सोचत रहले दीदियाँ त कब्बडी प्रैक्टिस खातिर गइल बारी, लेकिन माई - बाबूजी के पता ना चले के चाहीं अभी ।

मंगला : अबकी ओकर दसवीं खत्म होत बा, सिलाई आऊर कामकाज सीख ली, बाबूजी शादी के तैयारी में लाग गइल बारे

बिल्लू : का माई, अभी शादी । दीदियाँ आगे आऊर पढ़ी

मंगला : का होई पढ़ के, आखिर घर बार ही संभाली नू, डिग्री राखल रह जाई, हमहुँ त चीट्ठी भर पढ़ल बानी कऊनो कमी कइनी तोहार दुनो के परवरिश में ।

बिल्लू : ना हो माई, ई हम कहां कहतऽ बानि ।
समझ गइल बहस करला पे माई खिसियाँ जइहें
मन में दृढ़ता से कहतऽ भले दीदियाँ नौकरी ना करे लेकिन पढ़ाई लिखाई जीवन भर काम आई, आ ऊ त स्कूल में हेतना अच्छा कब्बडी खेले ली, समय आवे पर सब मेडल जऊन दीदियाँ पुआल में लुकववले बारी देखा देहम । लेकिन पढ़ाई ना छोड़े देहम ।
(चमकीली घर में घुसते हुए) : ए माई तनी कुछ खाए के दऽ ।
का बिल्लू हंसते हुए, कुस्ती कइलऽ ?
बिल्लू : का दीदियाँ तुहू
(धीमा आवाज में , बाबूजी आगइलन)

छुटन : मंगला - बलवंत का होता हो ? आज दुकान के प्रचार के बैनर बनवावे गइल रहनी निर्मल के बिटवा चटे ऊ नवका तकनीक लगाके, का तो कहलस रहे ऊ ई आई शायद ।

बिल्लू बीच में बोलते हुए, एआई बाबूजी ।

छुटन : ह ह, ठीक कहले, नया दौर के साथ चलल जरूरी हो गइल बा ।(बिल्लू के दिमाग में शादी आऊर मेकअप आर्टिस्ट वाला बात चलतअ रहे)

खाना पीना खइला के बाद सब लोगिन सुते चलल
चमकीली : बिल्लू एगो दिक्कत बा
बिल्लू : (चिंता के साथ) का भइल दीदी, प्रैक्टिस में कऊनो बात हो गइल या कोई तोहरा परेशान कइलस ?

चमकीली : ऊ आज सर बतवले ह कि कबड्डी के स्टेट लेवल के गेम होखे वाला बा, ओहिजा सलेक्ट होला पर नेशनल लेवल पर । सर के पूरा भरोसा बा कि हम आगे जा सकिला ।

बिल्लू : (हौसला बढ़ावत) ह दीदी तू जरूर सफल होइबु ।
चमकीली : उदास मन से... लेकिन बबुआ !
बिल्लू : तू परेशान मत होखअ, हम बात करब सवेरे ।

बिल्लू: (सुबह सुबह उठ के) ए बाबूजी ! चलि अखाड़ा कुश्ती करे ।
बाबूजी अभी बिस्तर पर ही रहले ।बिल्लू के आवाज सुन के, "का हो मंगला ! आज सूरज बाबा पश्चिम से आइल बारे का ? मने - मने खुशो हो रहलन ।बबुआ लाइन पर आ गइल लागत बा । हमार इच्छा रहल कि एक दिन इ बड़का रेसलिंग चैपिंयन बने ।

छुटन : चल बलवंत, आज तोहरा शंभू काका से मिलवाइम बहुत नाम बा उनकर रेसलिंग में

बिल्लू : बाबूजी एकगो बात कहीं, हमरा मेकअप आर्टिस्ट बनेके बा, रेसलर ना ।
छुटन : चुप्प बुरबक, माथा घूम गइल होऊ का रे । इ सब लइकिन वाला काम बा ।
(बातचीत करत अखाड़ा पहुंचलन । फिर घर आ के गाय के चारा पानी के काम में लाग गइलन)

बिल्लू : ए बाबूजी पुआल ले आईं, कुटी काटल जाए ।
छुटन : अच्छा, रूक । अरे ई कऊना के ह रे ।
बिल्लू : उछल कर, का बाबूजी ?अच्छा । ई मेडल दीदी जीतल बिया ।
छुटन : (चौक गइलन) कइसे, कब ?
बिल्लू : दीदी कबड्डी में जीतल बारी, स्कूल में ।

छुटन : कबड्डी ? आऊर लइकी खेलेली ? तू दुनो, हे भगवान ।
चमकीली के आवाज दे के बोलावल गइल ।

चमकीली : का बाबूजी, तू स्कूल पढ़े खातिर जालिस कि हाफ पैंट पहिन कबड्डी खेले, कुछ ऊंच नीच हो गइल त, शादी बियाह में केतना दिक्कत आई, आज काल नवका जुग में सोशल मीडिया पे रोज ऊटपटांग खबर आ तस्वीर फैलत रहेला ।

दोनों भाई बहिन बाबूजी के समुझावे के कोशिश में लाग गइले ।
बाबूजी पहिले के जमाना गइल हइ काम लइका करि, हइ लइकी । आजकल जेकरा में जवन गुण बा ऊ उहे काम करत बा। अपन गाँव में ही केतना लोगिन मिल जाई जे बिना समाज और गलत सही बोले वाले के सोचे, अपन मन के काम करत बा लोगिन, फिर हमनी के काहे ना ?
बिल्लू : ए बाबूजी, रऊआ त एआई के तारीफ करत रही ऊहू त नवका दौर के चीज बा ।

छुटन : तू त चुप्प रह बुरबक, ढेर दिमाग मत लगाउ ।
(बहुते देरी ले अइसही तीनों के बीच खूब बात भइल)
आखिर में बाबूजी के दुनो भाई बहिन मना लिहले ।

आगे बलवंत मेकअप आर्टिस्ट बनेके और चमकीली नेशनल चैंपियन बनके आपन परिवार के नाम गौरवान्वित कइलस लोग ।

(रूचि के काम अगर करे दिहल जाए त हर बच्चा अपन जीवन में बेहतर कर सकेला)

रिंकी सोनी (आरा)

अन्हरिया में अँजोरिया

केतना दिन जमाना के बाद आज ए पेड़ा से सुरसती के जाए के मउका मिलल बा । बगइचा के झिहिर - झिहिर बेयार बड़ा सोहावन लागत रहे । बरियारी गड़िवान के रोकवाए के मन रहे । बाकिर अन्हार हो जाइत त बाटे ना बुझाइत । लड़काई के सगरी बात मन परे लागल । अमवारी के झुलुआ, भईंस के सवारी, पतहर झोंक के मछरी पकावल, डँडेर पर के दउराई, गड़ही में गरई मछरी के पकड़ाई, पुअरा के पूँँज पर के चढ़ाई, फेन धब - धब गिराई - लरिकाईं के एकहगो बात मन पर धुआँ लेखा छापे लागल । उहो का दिन रहे ! मन के राजा रहनी सन ।

जइसहीं बैलगाड़ी सतरोहन भईया के दुआरी पर चहुंँपल रोअना - पिटना सुरु हो गइल । भउजी के मुंँह पर के त रोहानिये ओरा गइल रहे । केतना सुन्नर रहली भउजी जवना बेरा उतरल रहली तब । सुरसती से तनिके उमिरगर होखिहें । भउजी दोंगा क के अइली आ सुरसती के बियाह - गौना भइल । एक लेखा से सखियारो रहे दुनू जाने में । ना भउजी पढ़ल-लिखल रहली ना सुरसती । बाकिर सनेह एतना रहे कि बेकहले एक दोसरा के मन के बात बूझ लेत रहे लोगिन ।

सुरसती के उतरते भउजी भर - पांजा अंकवारी में ध लेहली । "बबी हो बबी आ भउजी हो भउजी" कुछ देर तक गांव - जवार के लोगिन के लोर से भेवें लागल । जब हिक भर लोर उझिल गईल त भउजी बड़की पतोह से कठरा में पानी मंगवईली आ सुरसती के गोड़ धोए लगली । सुरसती के बेर - बेर मने कईला पर भी भउजी ना मानस -"बड़ा भाग से नु बहिन - बेटी के,भगिना - बाभन के गोंड़ धोए के मउका मिलेला ।" अंचरा से गोड़ पोंछाईल..भहरा के गोड़ लगली । तब जा के सानत भईली ।

पतोहिया से मिसरी पानी मंगवईली । गांव - जवार के बात बिखिन चले लागल । सतरोहन भईया के मरला के हुको रहे । बाकिर सुरसती जानत रहली कि भईया के तीसरको मेहरारू ई भऊजी रहली ।पहिलका देह से त बाले - बच्चा ना रहे । दोसरको से एगो बेटी रहे । दुनू जाने मर - बिला गईल लोग त ई भउजी उतरली । गांव - जवार टोन मारे - कईसन अभागल कुटुम के बाडी़.. अईसन बूढ़ मरद से बियहले बाड़न स ।

मने सुरसती निमन से जानतारी कि भऊजी के पैरा परल केतना सुभ रहे । 13 - 14 बरस के लुकझुक कनिया केतना महीनी से सबकर निरवाह कई देहली । जे घरी ऊ नया नया आईल रहली, ई घर लोगिन से भरल रहत रहे । किरिन उगला से पहिलहीं भऊजी के छम - छम सुरु हो जात रहे । बड़का - बड़का फुलहा बटुलोही उतारत देरिये

ना लागे । धान उसीनला से लेके पनपियाव बनईला ले - सब भऊजी के कपारे । दुअरा पर गाय - गोहार अलगे..माल - जाल के पखेव बनाव..दूध औंट..।जेठ - बईसाख..भरल भादो भऊजी के कपारे कबहूं रेघारी ना आईल ।

ढेर दिन पर भेंट भईल रहे । राति बतियावते बीत गईल । भोरे नहा सोना के घामा में तरई बिछल ।सुरसती के तनी फिकिर भईल - एगो पतोहिया त आगु - पाछू लागल बिया बाकिर छोटकी त लउकबे ना कईल -"का हो भऊजी !! तोहार छोटकी पतोहिया नईखे लउकत ?"

"अरे का कहबू बबी ! अठान - कठान लगवले बीया। तोहार भईया पढ़ल - लिखल पतोह उतरलें । कहलें - पढ़निहार पतोह निमन होली सन ।बाकिर सबमें बहेंगवा उहे बीया..बड़का अंगरेजी छांटेले । ठठा के भऊजी हंसे लगली । नन्हका के सुरसती पेठवली - जो रे छवडा़ !!छोटकी के बोला ले आव त । कह फुआ बोलावतारी ।

तनिका देरी के बाद रमत - झमत पढ़लको पतोह उतरतारी - "परनाम फुआ ! कएसी हएं फुआ ?ईहां गांव - देहात में हमरा मन नहीं लगता है । हम सहर के हएं । हम पढ़ल - लिखल हएं । ई लोग के कुछु बुझाता हए ? कहते हएं हमको अलगा क दीजिए । हमरा से ई चूल्हा नहीं झोंकाएगा । हम माटी - झेंटी का कार नहीं नूं किये हएं । ईंहां तो कोई बुझबे नहीं करता हए । आप आईं हए तो आपही समझाईए ना ।"

सुरसती के त काठी मार देहलस । का हो भईया कईसन पतोह उतरले बाड़ ! एकरा त देह के सहूरे नईखे । ना मुडी़ पर आंचर, ना कवनो अदब, ई त सलवार - फराक पहिन के नचनिया बनल बीया । अईसन धीर - गंभीर भऊजी के अईसन बेलूरा पतोह ।बड़का हूक के बात बा ।

पनरह दिन कईसे बीत गईल, पते ना चलल । सभे से मेलजोल, सबका ईंहां पुरनका लोग जे रहे बड़ा मान - आदर कईल । सुरसती के करेजा जुड़ा गईल । अब बेर - बेर बेटवा के फोन आवे लागल ।

बडा़ निहोरा - पाती पर भऊजीओ चले के तईयार भईली ।सुरसती केतना समझवली - बडा़ देह खटवलू.. तोहरा अब आराम के जरुरत बा.. अब ई जाल छोड़.. धन - बीत रहे चाहे बिलाए.. ई लोग बूझे.. जिनगी भर तूहीं देखबू.. राखी लोग त भोगी लोग.. ना राखी लोग त भीख मांगी लोग.. तू अब चएन से जीय ।

एही बीच छोटको बेटा - पतोह अलगा हो गईल लोग । भऊजी खातिर निमने भईल । दिन भर उनकर चूल्हे तर बीत जात रहे । बड़की होसियार रहे । संघे लाग के करवावत रहे । ओकरे के समझा - बुझा के भऊजी चले के तईयार भईली । खोईंछा

भराईल.. दुआरी पर कलसा रखाईल.. गांव - जवार के पुरनका लोग सुरसती के अंकवारी भर - भर के बिदा कईल लोग । भऊजी जेतरे - जेतरे समझवली बड़की पतोहिया सब कईलस । बड़की पतोहिया ओतना पढ़ल ना रहे बाकिर अछर चिन्हत रहे ।

रस्ता - पेडा़ में बरहम बाबा, सीतला माई के अंचरा उठा - उठा के ननद - भऊजाई गोहरवलस लोग । सुरसती के समझ में ना आईल कि लोग पढ़ - लिख के होसियार होला आकि बेपढ़ले । आ अगर निरछरे ढेर होसियार होला त फेर पढ़ला के का जरुरत । बैलगाड़ी के हेव - हेव में सुरसती के बातो भोर पर गईल ।

डॉ शिप्रा मिश्रा

इंसाफ के असरा

"अब का करीं !" नन्हकू कपारे हाथ ध के बइठि गइलन । आ सोचे लगलन । गधबेर के बेरा रहे । चारों ओर गते गते करिखाही चदरा तनाये लागल रहे । माल मवेशी बने बधारी से चरि चूरि के अपना मालिक मुखर का ढाबा ओसारा में लवटि के पंखुरी करें लागल रहन । नन्हकू के मेहरारू रामपियारी नन्हकू के असरा में बइठल रही कि ऊ आवसु त मन अहथिर होंखो । अगल बगल सभ मुद्दइये मोखालिफ बाड़ें स, का पता कब कवना के कपार प कवन पाप सवार हो जाय !

अठारह बीस बरिस बीत गइल, थाना कचहरी दउरत दउरत । आजु ले इंसाफ ना मिलल । अब कइसे केहू जीही ! एही सभ सोच में पड़ल रामपियारी अपना मरद नन्हकू के राह देखत रही । तबले नन्हकू आ गइलन आ उदास सूखल झुराइल मुंह लिहले अंगना में धइल झलंगी बंसखट प पसरि गइलन ।

"का भइल हां ?" राम परियारी उनुकर बुताइल रोखी देखि के पूछली ।

"कुछ ना भइल हा ।"

"तब काहें के बोलवले रहल हा मुअना मटिलगना ?" काहें धवावत बा ? काम धंधा आ रोजी रोजगार छोड़ि के हरदम जाए के पड़त बा । आजुओ के दिन बेकार गइल नू ? ओकरा का पता बा कि इहंवा रोज कुआं खोदे के बा आ रोज पानी पीएं के बा ।"

"हमरा बुझात नइखे रामचनर के माई, अब हम का करीं ! कहिया ले दउरीं ! द एक लोटा पानी । बड़ा जोर पिआस लागल बा ।"

रामपियारी पानी ले आवे चल ग इली । नन्हकू डूबि गइलन पिछिला खोह में ।

"ल रामचनर के माई । मिल गइल । अहथिर धरऽ !"

"का ह ?"

"जमीन के परचा !"

"कइसन परचा ?"

"पागले रहि गइलू का ? सरकार का ओर से भूमिहीन गरीब के जमीन बंटाता । हमनियो के पन्द्रह काठा मिलल हा !"

"हे भगवान ! हे काली माई ! धनि भाग, हमनी के दुख देखलस सरकार । रहे के सरन दे लेलस ।" रामप्यारी के आंखि चमकि उठली स । बिजुरी पइसि गइल अंगे अंग ! "अब हमनियो के हो गइनी जा पंच बरोबर ।"

"हं हो, हमनी के किस्मत जागि गइल । ना त एगो मड़ई में कइसे गूजर होइत ! बाल बाचा सेयान होत बाड़ें स । मेहनत मजदूरी के बल पर जमीन लियाइत ना । मालिक लोग के बेगारी करत जिनगी खपित । ना कइला प मड़ई उजारि दिहित लोग । भा आगि लगा दिहित लोग । फेनु कहंवा जइतीं जा !"

"अब त अपना जमीन में झोपड़ियों डालि के रही नू अदिमी । परबस ना नू रही । ओहू लोगन के नजर हमरे प गड़ल रहेगा । बुढ़वो भउजी कहेलन स । जवनका त ललचले रहेलन स । कबो कबो बोलियों टिबोली बोल देलन स ।

"अइसन बात मत निकाल मुंह से । ना त सुनिहें स त ओदबाद करें लगिहन स । हम कुल्हि जानत बानी । हमरा ना रहला प का गुजरेला तहरा प ! बाकिर खून के घूंट पी के रहि जाइला । अब त आपन जमीन हो गइल । केहू आंखि ना देखा सकी । काल्हुए से अपना जमीन में मड़ई लगावे के जोगाड़ करत बानी ।"

ल, पी ल पानी ।" रामप्यारी मरद के पानी के लोटा धरावत कहली । बाकिर नन्हकू त डूबल रहन अठारह बीस पहिले के चकोह में । उनुकर बात सुनलन ना ।

"सुनत नइखऽ, करना खोह में अझुराइल बाड़ऽ ? सोचत सोचत त सउसे देहि सुखवा लिहल । जवानिये में बुढ़ारी आ गइल । आंखिन प चश्मा चढ़ि गइल ।" रामप्यारी फेनु टोकली त नन्हकू के धेयान टूटल । रामप्यारी का ओर देखते लोटा के पानी लेबे खातिर हाथ बढ़ा देलन ।

"काहें अन्हार भइल बा ?" पानी पी के मेहरारू से पुछलन ।

"सांझि हो गइल त अन्हार ना होई !"

"सांझि हो गइल !" सोच के समुंदर में डूबल नन्हकू के होस ना रहल कि कब

बिहान भइल ,कब दुपहरिया आ कब सुरुज डूबि ग इलें ! काम के झोंक में दउरत धूपत इयादों ससुरी धोखा दे देले रहे ।

"अब दियवा बारि द ।"

"का दीया बारीं हो । कहंवा कहंवा दीया बारीं ? संउसे जिनिगिए जब अन्हारे में सउनाइल बा ।"

नन्हकू सोचे लगलन, बाबू कुछ ना कइलन हमरा खातिर । ज़िन्दगी भर दोहरा के बेगारी कइलन आ मूए के बेर हमरो प लादि गइलन । कवना दो भागे जमीन के परचा मिलल त एहू प ससुरन के नजर लागि गइल । अबर दूबर जानि के चारों ओर से हंथवसि लिहलन स । पन्द्रह काटा में मुश्किल से दूं तीन काटा जमीन हके लागल । तू जा, पहिले दीया जरावऽ । चारों ओर भकसावन लागत बा । चूल्हा ना धरी का आज ?"

"ना, दिने के भात बांचल बा । हरियर मरीचा भुंजले बानी । उन्हें खा के रात्रि काटि लिहल जाई । पतोहिया आई नइहर से तब दूऩो बेरा चूल्हा जरी । लवनो के दुखे नू बा ।" रामप्यारी चल गइली दीया बारे । नन्हकू कपारे हाथ दिहले सोचे लगलन ।

"का रे नन्हकुआ, अब मरदाहि भुला गइल ? कवनों बड़ आदमी कब्जा कइले रहित त संउसे नान्ह रेयान एकवटि के जिंदाबाद मुर्दाबाद कइले रहितऽ स नू ?" बहुत दिन पहिले के एगो बात सट् सट् सोंटा मरलस नन्हकू के दिमाग में ।

"बुरड़क के भ़इसि बिआइल त संउसे गांव घूंचा ले के दउरल । उहे हाल हो गइल नन्हकू के जमीन का साथे । जमीन दखलिआवे के सावंग ना रहे । मालिक के मड़ई छोड़ि के आ गइलें अपना जमीन प । ऊंखि के पतई आ पतलो के इंतजाम कइलें । गांव घर से बांस फांस आ फूस फांस जोगाड़ कइलें आ दू गो मड़ई खाड़ के लिहलें अपना हाथे। बांचल जमीन में अधिया बंटइया ले के दूं गो पाड़ी पोसि लिहलें । लइका पाड़ी चरावें लागल । घुमला छिछिअइला से जान बांचल । निफिकिर हो के मेहनत मजदूरी करें लगलन । मेहरारू आपन भनसार बना लिहली । बगइचा से आम महुआ के पतई बहारि के ले अइली आ भुजुना अनाज भूंजे लगली गांव घर के ।

महिनों ना बीतल, लूटन जादो उनुका घर के सोझा आपन भंइस बान्हि दिहलें ।

"ई का हो, ई का करत बाड़ऽ ?" नन्हकू मुन्हारही पूछलें ।

"तहरा लउकत नइखे कि भंइस बन्हनी हा !"

"हमरे जमीन में तोहार भंइस बन्हाई ? अपना जमीन में काहें नइखऽ बान्हत ?"

"फेनु हटा लेब । रहे द दूं चार दिन । हमार भंइसिया तोहार जमीनिया ना नू खा जाई !"

नन्हकू चुपा गइलन । पास पड़ोस के बात बा । अन्हारे अंजोरे सबसे काम पड़ेगा । गांव घर में धतूरों रहेला त कवनो कामे आ जाला । हमरा त मेहनत मजदूरी पर जिये के बा । खेत-बधार त बा ना । पुंजी पाटा दोसर हइए नइखे । भर दिन जांगर ठेठावऽ त दूं गो रोटी पावऽ ।

बाकिर सोझिया के मुंह कुकुर चाटेला । कुछ दिन का बाद देखत बाड़ें कि लूटन के भाइयों लोग आपन आपन खूंटा गाड़ि के उनुका मड़ई के आगा पाछा, बातें दायें, भंइस पाड़ी बान्हि दिहल लोग ।

उठिये सुती ऊ अपना मेहरारू से कहलें, हई देखऽ हो, ई त चारों ओर से घेर दिहलन स ।"

"तू टोकत काहें नइखऽ ? चुपाइल काहें बाड़ऽ ? हाथ धरत धरत पाहुंच पकड़ि लीहें स । मना क द । आपन माल गरू अपना घरे बान्हस लोग ।"

"हमरा ना रहला प सबके सभ खूंटा गड़ले हां स । देखतीं त टोकबे करितीं । तू त घरहीं रहत बाड़ू । तहरा ना टोके के चाहीं ?"

"हमरा टोकरा से मनिहें स ! हमहूं चौबीसों घंटा मड़ई अगोरले रहत बानी का ! अपना दुखड़ा धंधा में रहत बानी, तबे सांझि बिहान दूं कवर भेंटा जाता । जा अबहिए, हटवाव सभन के भंइस खूंटा ।"

नन्हकू बारी बारी से गइलन सबके दुआरी प । चिचिअइलन दुआरी प से । केहू बोलल, केहू ना बोलल । केहू लइकन से बहाना करवा दिहल । "घरे नइखन ।"

गरीब गुरबा के बात के सुनेला ? सुनियो के अंठिया देला । लूटन सुनलें त निकललें घर से ।

"क ह हो नन्हकू ?"

"देखत नइखऽ , सबके भइस हमरे जमीन में बन्हइहें स ?"

"त का हो गइल ? परतिये नू बा ! घेरे लगबऽ त हटा दीही लोग ।"

"ना भाई, ई काम ठीक नइखे । आपन भंइस हटावऽ. लोग । खाड़ होत होत बइठे सूते लगबऽ लोग । हम अकेला आदमी केकरा के करा से मारा मारी करब ?"

"हम बानी नू, तू काहें चिंता करत बाड़ऽ ? हम हटाइब सबका के । घेरे लगिहऽ त कहिहऽ ।"

"हमरा घेरे के सावंग बा अबहीं कि घेरब ? मेहनत मजूरी क के दूनों बेरा लेवन लाग जाता, इहे काफी बा ।"

"त काहें के अतना जमीन रखले बाड़ऽ ? अपना कामे भर राखऽ ना ! जोरू जमीन जोर के, ना त केहू और के ! जनता बाड़ऽ नू ?"

"देखऽ भाई, अइसे मत बतिआवऽ । तहरा के कहि दिहनी बान्हें के त देखा देखी सभलोग बान्हे लागल । हमरा भीरी लाठी के जोर नइखे नू कि तहरा लोग से लाठी खटखटाइब !"

"एही से नू कहत बानी, कि जा आपन रोजी मजूरी करऽ । जरूरत लागी त हमरा से कहिहऽ । हम बानी नू ! हमरा प बिस्वास नइखे ? गाढ़े सकेते के कामे आई ?"

"ठीके बा, तहरे बिस्वास प जात बानी ।"

"ठीक बा । जा । चिंता मत करऽ । तोहार बाबू हमनी के संघतिया रहन । बबुअनवा जब सतावत रहन स त हमनिये से आपन दुख सितम कहत रहन । हमनी के तोहार भलाइये करब जा । बुराई ना ।"

लूटन समुझा देलन । नन्हकू लवटि अइलन ।

"का भइल हा ?" मेहरारू आवते पुछली ।

"लूटन कहले हा कि हम बानी नू । तहरा जब जरूरत पड़ी हम सबके भंइस हटवा देब । बाबू के संघतिया हवन, हमरा साथे गलत बेवहार ना करिहें ।"

"केहू के भरोसा न इखे आज के जमाना में । मुंह में राम बगल में छूरी रहत बा । कब केकर ईमान डोल जाई, केहू नाइखे जानत । भाई भाई के न इखे छोड़त त हमरा तहरा के छोड़ीं ! आगे तू जनिहऽ ।" मेहरारू कहि के चुपा गईली ।

नन्हकू लूटन के भरोसा क लिहलें । अपना मेहनत मजूरी में लाग गइलें । सुबहे जासु त सांझे आवसु । आवते परि जासु बंसखट प । दिन भर के मेहनत से रग रग टूटत रहे । हाड़ चटके । दु कवर खासु आ नीन के झंकोरा में परि जासु ।

कुछ दिन का बाद देखत बाड़े कि उनुका मड़ई ई का पीछे एगो दोसर मड़ई लागल बा ।देखते देहि के खून सुखा गइल । तितकी लेस देलस । अइसन बिस्वास घात ! आंखिन से लुतुकी फेंके लागल । अकबका के बोललें, "अरे हई देखऽ हो ! कवना के दो मड़ई खाड़ हो गइल हमरा जमीन में !"

रामप्यारी निकलि अइली अपना मड़ई से बहरी । पिछूती देखली त आगि लागि गइल देहि में । लगली नतिया भतीजवा गरियावे । कवना नतियां के मड़ई है रे ! अबरा के मउगी गांव भर के भउजी बनल बिया ! अइसन कन्हेर होला भला ! जेकरें मन होता उहे दखल जमावे आ जाता ! कहंवा बाड़े लूटन ? का कहले रहन ? उनुका लउकत नइखे !

रामप्यारी के नकवाहिन गारी सुनि के मोहल्ला भर के लइका मेहरारू जूटि ग इलें । सबके सभ नयकी मड़ई का ओर अचरज से देखें लागल । रामप्यारी अपना मरद नन्हकू के चिचिअइली कहंवा बाड़ऽ हो , जा लूटन केहें । पूछऽ उनुका से, इस सभ का होता !"

नन्हकू दुलुकी नधले गइलन लूटन केहें । लूटन एनहीं आवत रहन । राहें में भेंटा गइलन । उनुका पीछे पीछे उनुकर भाइयों गोतिया लोग आवत रहे ।

"का काका, इसे सभ होई ?" नन्हकू उनुका के रोकि के पुछलें ।

"का भइल ?" उ अइसे पुछलें जइसे कुछ जानते ना होखसु ।

"हमरा जमीन में केकर मड़ई खाड़ हो गइल ?"

"केहू के होखबे करी !" उनुकर भासा बदलल रहे ।

संभलोग आ गइल ओह मड़ई भीरी ।

"मड़इये नू ह । महल नइखे नू उठल ? जब तहरा जरूरत लागी, हटि जाई ।" लूटन बेलस के बोललें ।

"एंकर मतलब इहे ह ? हम तहरा जमीन में लगाइब त लगावे देबऽ ?"

"काहें लगावे देब ?"

"तू काहें लगइब?"

"ई सरकारी जमीन ह । तोहार कीनल ना ह ।"

"हमरा सरकारी परचा मिलल बा । हम एंकर रसीद कटवले बानी । तू लोग आपन माल गरू हठाव लोग । अब केहू के माल गरू ना रही इहंवा ।"

"तोहार रहिहें स ? अवरू लोग के ना ?"

"ना । जमीन हमार ह । अउरी लोग के ना ।"

बकझक बढ़ि गइल । लूटन के भासा, नीयत, ईमान सभ बदलल रहे । ऊ आंखि तरेर के बोललें, "नन्हकुआ, तें हमरा के अबहिन चीन्हत नइखस । चलि जइबे एह दुनिया से ।"

"चीन्हत बानी । खूब बढ़िया से चीन्हत बानी । बिस्वास घाती आदमी हवऽ। ओह दिन कइसे बोलत रह । आज कइसे बोलत बाड़ऽ! चोरी आ सीनाजोरी दूनों ! सेन्हीं प बिरहा गइबऽ"

नन्हकू के बात लागि गइल लूटन के । उनुका पीछे उनुकर भाई बंद रहे लोग । ओहू लोग के खईक गड़ गइल ।

"मार रे, मार साला के ! एकर मन बढ़ि गइल बा ।अंजु बनिया काल्हु सेठ !" पीछे से एगो ललकरलस । आ तड़के लाठी गिरल कपार प नन्हकू के । बहि चलल खून के धार !

"जो, अब जहंवा जाये के होखे, जो । भंइसिन के खूंटा छुअले, आ मड़ई भीरी गइले त रोवनीहारो ना जूरी !"

नन्हकू अकेल ! करसु का ! ना धन, ना बल, ना सवांग !

खून के धार बहत देख, रामप्यारी से बरदास ना भइल । लगली भांड़े । सात पुहुत के उद्धार करे । दोसर बल बउसाय त रहे ना, दूनों बेकत चल दिहलें पुरनका मालिक के दुआर प । संकट के घरी में दोसर केहू ना लउकल । थाना कचहरी प जाये के बेंवत रहे ना ।

लूटन अपना भाई बंद के साथे उनुका के जात देखत रहन, ठठा के हंसलें, "जो, ऊ मरले रहे त हमरा भीरी आइल रहस । अब जो फेरु ओकरे भीरी । देखीं ऊ का उखाड़ लेता "!

नन्हकू चल गइलें पसपत सिंह के दुआर प । पसपत सिंह अपना दुआर प बइठल रहन । नन्हकू के देखते बोललन, "का रे नन्हकुआ, का हाल बा ? केने चलले हा ?"

"रउवे भीरी चलनी हा मालिक ।"

"का बात बा रे ?"

"लूटन हमरा जमीन पर कब्जा करत बाड़न । खूंटा गाड़ि दिहलें । भंइसि बान्हि दिहलें । अब मड़ इयो डालि दिहलें । चारों ओर से उनुकर भाई गोतिया हमार जमीन कब्जिया लिहलें । बोलला प लाठियों चला दिहलें हां । पनरह काठा में खाली दूं काटा हमरा कब्जा में रहि गइल । बाकी सभी हथिया लीहल लोग । हम अकसरुआ आदमी, लइका अबहिन नबोजे बाड़ें स । रउवा हमार मदद करीं मालिक, ना त हमार गांव छूटि जाई !"

"हम कइसे मदद करीं तोर रे ? ते हमार के हवे ?"

"काहें अइसे कहत बानी, मालिक ! हम राउर परजा पवनी हईं मालिक !"

"अब परजा पवनी वाला जमाना नइखे रे ! अब सभे राजा बा ! महीना में क दिन आवेलस हमरा दुआर प ? क दिन करेलस हमार बेगारी ? तोर मेहरियों अंइठत चलत बिया । क दिन आवेले हमरा घरे ?"

"गरीब आदमी चंडाल बरोबर, मालिक ! मेहनत मजूरी से सांवस नइखे मिलत । दू गो बाल बुतरू बाड़े स, ओकनिये के जियावे खियावे में दिन गुदस्त हो जाता । हमार तीन पीढ़ी राउर सेवा कइले बा । रउवा जमीन में रहल बा । आखिर में उ जमीनियो छोड़ दिहनी ।"

"तोर बालो बाचा त नइखन स आवत । उहो अइतें स त जीयत खात रहितन स । ओकनी भर त रोज जूठन फेंका जाला । कुकुर बिलाई खा जालन स ।"

"ऊहो भंइसि चरावें में बाझल बाड़ें स मालिक ।"

"त जो अपना मुखिया भीरी । सामाजिक न्याय के सरकार बिया, ओकरा भीरी जो । हमरा भीरी का अइले हा ? तोहनी के त अपने अंखफोर हो गइल बाड़ऽ स ।"

"रउवा ना कुछ करब ?"

"ना, उहे तोहनी के मददगार हवन स ।"

"रक्षके नू भक्षक भइल बा, मालिक । गरीब आदमी त चारों ओर से मारल जाता ।"

"हमनी के अइसे कइले रहितीं जा त संउसे गांव एकवटि जइतऽ स । झंडा पताका उड़ावें लगितऽ स । अब कहंवा गइल तोहनी के झंडा पताका ?"

"ठीके बा मालिक, जात बानी मुखिये भीरी । ऊ त कुछ करबे नू करिहें ।"

"हं हं,जल्दी जो । कपार कइसे फूटल हा ?"

"कहनी हा नू, टोकला खातिर लाठी चला देलस हा, लूटना ।"

"इहे कहाला सेन्ही प बिरहा गावल । मरबो करब आ रोवहूं ना देब । जइसने करनी ओइसने भरनी !"

नन्हकू निराश हो के उनुका ऊंचा चउतरा से नीचे उतरलें आ मुखिया जी का ओर राह धइलें । गली मोहाला में उनुका कपार के खून देखि के लोग बाग पूछल - "ई कइसे भइल हा नन्हकू ?"

"लूटन के करसाजी ह भइया । अबरा के केहू मददगार नइखे गांव में । हमार जमीनों दखल करत बा लोग आ मारतो बा लोग !"

ईहां से ऊंहां तक सभे सुनल उनुकर बात बाकिर केहू लूटन से पूछे के तेयार ना भइल कि काहें अइसे करत बाड़ऽ लोग । काहें एह गरीब के दबावत बाड़ऽ लोग ? तीन पुहुत के बाद त बेचारा बाघ के मुंह से निकलल हा, अब तू लोग काहें एकरा के तबाह करत बाड़ऽ लोग !"

नन्हकू पहुंच गइलें मुखिया जी के दुआर प । मुखिया जी अपना अमला फैला का साथे मजलिस जमवले रहन । उनुका नयका दुमंजिला मकान में काम लागल रहे । मिस्त्री मजूरा भीरल रहन । नन्हकू के देखते पुछलन मुखिया जी, "आवऽ आवऽ नन्हकू, कहऽ केने चललऽ हा ?"

"रउसे भीरी चलनी हा मुखिया जी ।"

"का समाचार हो ?"

"रउवे भाई गोतिया लोग हमार जमीन कब्जियावत बा । माना कइला प मारतो बा लोग । देखीं, लाठी से मारि के कपार फोरि देले बा लोग ।"

"लूटन भाई अइसे करत बाड़न ! हमरा त बिस्वास नइखे होत कि ऊ अइसन काम कर सकत बाड़न !" मुखिया जी चिहा के बोललन ।

"हं जी, आंखीं देखीं आ साखी पूछीं ! हमरो बहुत भरोसा रहे उनुका प । दागा दे दिहलें । पीठ में छूरा घोंप दिहलें । अब रउवे इंसाफ करीं । कतना दिन दउरला का बाद सरकार जमीन के पर्ची देले रहे । रसीदों कटा लेले बानी पनरह काठा के । तबो जीये नइखे देत लोग ।"

"आछा ठीक बा । तें जो , हम उनुका से भेंट करके पूछब, काहें अइसे करत बाड़न !" मुखिया जी नन्हकू के टरकावे खातिर कह दिहलें ।

"ना मुखिया जी, घरी में घर छूटे, नव घरी भद्रा मत लगाईं । अबहीं चलीं हमरा साथे, देख लीहीं, ओह लोग के ज्यादती, करनी करतूत !"

"अबहिन त बहुते काम में फंसल बानी, नन्हकू । देखते बाड़ऽ, मिस्त्री मजूरा काम में लागल बाड़ें । तूहूं लोग जा अपना काम में । जल्दिये ओरिया के आवऽ। एने मंगरू भाई के मेहरारू मूअल बिया । मजली जाये के बा । दू एक दिन दम धरऽ।"

"हम एको मिनट दम ना धरब मुखिया जी । हम जीयत ज़िन्दगी में नईखीं ।"

"त एगो काम करऽ। ग्राम कचहरी में चल जा । केस क दऽ। अइसे हमहूं जात भाई के ममिला में पड़ल ना चाहीं ला ।"

"तू इसे बतिया कहीं ना, कि भोट कटे के डर बा । नाज़ नखड़ा काहें करत बानी ? हम त जानते बानी कि जात भाई के पछ में जादा रहींला रउवा । अबरूआ के पंचायत में अगहर हो जाईंला ।"

"जब जानते रहऽ, त का करें अइलऽ हा ? हमहूं जानत बानी कि तू पसपत सिंह के आदमी हवऽ। तीन पीढ़ी के खून पीयलन स । बेगारी आ टहलदारी करववलें सऽ। आ अन्त में अपना जमीन में से हटाइओ देलन स । चल जा फेर ओहिजे । उहे नीमन इंसाफ करिहें ।"

"अइसे काहें कहत बानी मुखिया जी । भोट हम रउआ के देले बानी । उनुका के नइखीं दिहले । इहे लूटन हमार कान भरले रहन । आज हमरा के लूटे खातिर तेयार बाड़न । काल्ह तक जे अत्याचार के विरोध करत रहे, आज उहे अत्याचार करें लागल बा । "

"नन्हकुआ, तेहूं बहुत बोले लगले । जल्दी भाग जो इहंवा से । ना त मारत मारत चाम छिल देबि देह के ।" मुखिया जी अपना असलियत प आ गइलें

"हमार त चाम छिलिए देब, हम त जानते बानी । अपना गोतियवन के चाम काहें नइखीं छीलत ! संउसे गांव में हाला मचवले बाड़न स कि मुखियवा फलनवा बो के रखले बा । रात बिरात अपना दलान में बोला लेला ।"

"अरें सैतान, ते भगबे कि ना इहंवा से ! बढ़ बढ़ के बोलबे ?"

"हम नइखीं बोलत, राउर गोतियवे कहेलन स । गरीब आदमी चंडाल बरोबर होला, मुखिया जी । ना त हइसे ना बोलतीं रावा । सबका खातिर टाइम बा रावा भीरी । हमरा खातिर टाइमें नइखे । काल्ह तक हमरे पाटी में रहीं रावा । आजु पद पा गइनी त हमरे चाम छीले लगनी ! ना त बबुआनन के आगे बकार ना निकलत रहे ।"

"बस बस , बहुते बोल दिहले । जो इहंवा से । ना त कपार प जूता गिरे लागी ।"

नन्हकू बूझि गइलें उनुकर मंशा । जाति भाई के बात बा । ई एह ममिला में कुछ ना करिहें । गंवे से उहंवा से टकसि गइलें ।

घरे गइलें त मेहरारू खटपरू भइल रही । जमीन के चिंता महमंड प संवार रहे । उनुका के देखते उठि के बइठली । "का भइल ?" पुछली ।

"कुछ ना भइल । जात बानी थाना प ।" नन्हकू मुरझाइले बोललें ।

"हं जा, नतियां धमकी देके गइले हां स कि ढेर फुटुर फुटुर करबे त गांव छोड़ा देब जा ।"

"ओकनिये के माई बिआइल बिया गांव छोड़ावे खातिर ? ओकनी के बाप के गांव ह ! हम जात नू बानी थाना प । गांव घर से कहि के देख लिहनी नू । गांव हमरा के दोस ना नू दीही ।"

"हमहूं चलीं का ?"

"तू का करें जइबू ? घरवा के देखीं ? दू गो नबोज लइका बाड़न स । भंइस पाड़ी बाड़ी स । चारो ओर मुद्दई मोखलिफ बाड़न स । हम अकेलहीं जाईब । कुछ पइसा कउड़ी होखे त दे द । थाना पुलिस बिना पइसा के एको डेग ना हिले ।"

अब तक के पेट काटि के पांच स रुपिया ले के नन्हकू थाना प चल दिहलें । आजु से पहिले ऊ कबो थाना प गइल ना रहन । जीव धुक धुक करत रहे । दरोग़ा सिपाही के देखते देखि में जाड़ हो जात रहे । लोगन से सुनले रहन कि थाना पुलिस केहू के ना होला । कुकुर के जात होला । जेही माल दीही ओकरे पछ लीही । पइसा के जामल होला । दूनो ओर से टानेला । ओहिजा इंसाफ बेचाला । तो मरता का ना करता ! गंवे गंवे पहुचि गइलें । संउसे राह एहीं चिंता में कटि गइल । ना खेत लउकल ना बधार । ना चिरईं, ना चुरूंग । ना सियार, ना घोड़परास । आंखिन में थाना के लाल घर आ लूटन समाइल रहल ।

ई पहिला बेर रहे, जब कवनो गरीब मजूर अकेले थाना प गइल रहे । एकरा पहिले कवनों गंउवा मुख्तार लोग कवनो ममिला के ले के थाना प जात रहे लोग । जेकर ममिला होखे ओकरा से पइसा कउड़ी लेत रहे लोग । आधा तीतर आधा बटेर हो जात रहे । बाकिर अबकी त केहू नावें ना लीहल ।

थाना के ऊंचका ढाबा प चढ़े के पहिले नन्हकू के गोड़ थर् थर् कांपते रहे । हीयरा धक्् धक्् करत रहे । पुरहर हियाव जुटा के, जीव जांति के, ऊ थाना के सीढ़ी पर पहुंचलें त एगो चौकीदार लउकल।

अब नन्हकू के जीव में जीव पड़ल । ऊ दूरे से पुछलस, "का ह हो, टेकरा के खोजत बाड़ऽ ?"

"दरोग़ा जी के ।"

"का बात बा ?"

"केस करें के बा ।"

"केकरा प ?"

"लूटन प ।"

"काहें खातिर ।"

"हमरा जमीन पर बलाते कब्जा कइले बा लोग । हमरा परिवार के तंगो करत बा लोग । हरदम संड़सिअवले रहत बा लोग ।"

"माल पानी बा चेट में ?"

"काहें खातिर ?"

"बिना माल पानी के केस होला भकचोन्हर दास ?"

"पांच सइ बा ।"

"पांच सइ में केस होला चोन्हर दास ?"

"तब कतना में होला ?"

"पांच हजार चाहीं, पांच हजार !"

"पहिले दरोग़ा जी से भेंट करावऽ ना । हम आपन अर्जी मिनती करब नू ! पहिले तू हीं मुंह बा दिहलऽ !"

तबले दरोग़ा जी आ गइलें । कुरसी पर बइठते पुछलें, "का बात बा ?" नन्हकू आपन सभ दुख सुना दिहलें । आंखिन में लोर भर आइल ।

दरोग़ा जी बूझि गइलें सभ बात । इहो बूझि गइलें कि एह तीसी तेल नइखे । नन्हकू के डांटिए के बोललें, "गांव में मुखिया सरपंच नइखन, जायज नजायज देखेवाला ? जा, ओहीं लोग से कहऽ ।"

"केहू नइखे सुनत, सरकार ! सबका से कहि चुकनी । मुंहदेखल बात करत बा लोग । जहां रस, तहां बस, वाली बात बा । गरीब आदमी के सुनवइया केहू नइखे । रउवे हमार माई बाप बानी ।"

नन्हकू खूब रोवलें गिड़गिड़इलें । बाकिर पत्थर पर दूब ना जामल । अंत में दरोग़ा जी पुछलें,"कतना पइसा ले आइल बाड़ऽ?"

"पांच सइ बा सरकार ।"

"पांच सइ में पनरह काठा कब्जा होई मुरुखदास ! मुफुत में जमीन मिल गइल त मुफुते में कब्जों हो जाई ! जा, घरे जा !" जतना प कब्जा बा ओतने प संतोष करऽ। ढेर लालच ना करे के । लालच बुरी बलाय ह !"

नन्हकू बहुत देर ले दरोग़ा जी के मुंह देखत रहि गइलें ।बाकिर उनुकर करेजा ना पिघलल । निराश मन घरे लवटि अइलें नन्हकू ।

जब लूटन के पता चलल कि नन्हकुआ थाना प गइल रहल हा, ऊ दोसरे दिन थाना प पहुंच गइलें आ दरोग़ा जी के पुरहर सेवा क अइलें ।

अब का करसु नन्हकू ! चारों ओर अन्हरिया घेर लेलस । कहीं से कवनो सहारा ना लउके । मानो कवनो बड़का पहाड़ से जंताइल होखस । जीव ऊब चुभ में पड़ल रहे । का करीं छोड़ दीहीं आपन जमीन ! संउसे ज़िन्दगी चलिए गइल एही जमीन के चलते । काल्हु आ के हमार मड़इयो हथिया लीहें स । तब का करब ? कहियो हमरा मेहरारुओ के कब्जा में क लीहें स, त चुपचाप बइठि जाईब ! दरोगे सबसे बड़ा अफसर होला ! एकरा ऊपर कवनो अफसर ना होला ? अइसे हार गइला से क दिन जीयब ? ऊंहूं, हम आगे जाईब । चाहे कुछों होखे । केहू त सुनी हमार दुख दरद !

मंगर का दिने नन्हकू गमछी में चार गो फुटेहरी बन्हलें आ भोरहीं निकलि गइलें घर से । फुटेहरी बसिअउरा रहे । उहे दिन भर के भोजन रहे । मेहरारू से कहि के रातिये में बनवा लेले रहन । जाये के बा जिला प । एस पी साहेब केहें । बड़का साहेब हवें । जरूर दुख सुनिहें । बाल बाचा के देखिहऽ । माल गरू के सम्हरिह । लवटे में रात हो जाई । घबड़इह मत। ।

गाड़ी एक घंटा लेट रहे तबो ऊ समय से साहेब के दरबार में पहुंचि गइलें । पहिले त ऊंहवा के रोब दाब देखि के ऊ घबड़इलें संकुचलें बाकी फेनु सोचलें, का करिहें ! कवनों कोंका हवें कि लील जइहें । अदिमिये नू हवें । कुछ करिहें ना, त बान्हि ना नू दीहें । अनेरे हम डेराइल बानी । बड़का बड़का चोर डाकू आ हतेयारा त डेराते नइखन स । सोचते चलि गइवेंट साहेब के चेंबर तक ।

एगो सिपाही उहंवे रोकि दिहलस । "का बात बा ?"

"साहेब से उजुर लगावे के बा । गरीब आदमी हई। राघोपुर घर ह । साहेब बानी नू ?" नन्हकू डेराते डेराते पुछलें ।

"हं बाड़न । आधा घंटा बाद मिलिहें । अबहीं मिटिंग में बाड़न । बइठऽ बहरी बेंच प।"

नन्हकू बइठ गइलें, बहरी लागल बेंच प । देखें लगें चारों ओर । खूब सुंदर सुंदर फूल फुलाइल रहे । नीमन सुगंध गमकत रहे । अचके दिमाग चल गइल गांव घर का ओर । आपन जमीन । मड़ई । भंइस गरू । मेहरारू । नबोज लइका बुतरू । लूटन के पहिलकी बात । दुसरकी बात । फेनु लाठी पटकल कपार प । उनुकर बिस्वास घात । बलजोरी । सभ लउके लागल बइठले बइठल । एक दिन के मजूरी गइल मुफुते में आज

। अइसन अइसन कतने दिन के मजूरी चल गइल । बंटइया के खेती बारी छूटिए गइल एही चक्कर में ।

तबहीं सिपाही कहलस, "जा जा, मिल ल । ना त साहेब चल जइहें कतहीं अउर ।"

नन्हकू हहुआइले उठलें आ साहेब के कोठरी में ढुकि गइलें । साहेब से सभ बात रो रो के कहि दिहलें । भोंकार पार के रोवहूं लगलें ।

साहेब के बिस्वास हो गइल । सही आ इमानदार आदमी बा । आगे के कारवाई करें के दिलासा दिहलें । "ठीक बा, तू जा, हम दरोग़ा से बात करत बानी । तहरा इंसाफ जरूर मिली ।"

नन्हकू के मन अहथिर हो गइल । बहरी आके फुटेहरी खइलें । चापाकल प चुरुआ से पानी पियलें । आ गावें लवटि अइलें ।

बीस बरिस बीत गइल । एह बीचे चार हाली भोट भइल । चार हाली सरकार बनल । एक दू हाली पलटा पलटी भइल । बाल बाचा सेयान हो गइलें । मेहनत मजूरी करें लगलें। मेहरारू बुढ़ा गइल । उहो बुढ़ा गइलें । अब इंसाफ मिली। तब इंसाफ मिली । एसी असरा में कलट्टर साहेब, एस पी साहेब, बी डी ओ साहेब, सी ओ साहेब सबके दुआर खटखटा अइलें । बाकिर ना जाने कवना गली में भुला गइल बा इंसाफ । इंसाफ के खोज में ऊ हरदम लागल रहलें । पेट काटि के अपना मेहनत मजदूरी के पइसा में से ओह लोग के सेवो सुसुरसा कइलें बाकिर आन्हीं के आगे बेना के बतास कवनो कामे ना आइल ।

थहरा गइलें नन्हकू । लइका फइका अनपढ़ रहि गइलें स । भागि गइलन स गांव छोड़ि के ।

बाकिर नन्हकू अबहियों बाड़न इंसाफ के असरा में । उनुका भीरी अब एकही विकल्प बा 'लड़ि मरे कि परि मरे !' बइठल बा इहे बात उनुका मन में । कपारे हाथ ध के सोचता बाड़न । अन्हरिया रात बा । सगरो उरुवन के बोली सुनात बा । कुछ देर पहिले लोग बाग के बोली सुनाते रहे । महुआ के नाशा में बड़बड़ात लोगन के बोली आ

डंकरल सुनात रहे । अबहीं ढेर रात ना बीतल रहे । तबहूं पसरल रहे करिया कमरी ओढ़ ले रात के सन्नाटा ।

नन्हकू अचके उठलें । मेहरारू से कहलें ,"घबड़इह मत ,हम आवत बानी । एगो जरूरी काम क के ।" जबले मेहरारू कुछ पुछती,तब ले ऊ सरसरइले निकलि गइलें गांव के दखिन टोला का ओर,जेने रहेलन स बड़का बड़का खूंखार जीव ।

सुरेश कांटक
कांट, बक्सर (बिहार)

नेह के डोर

जे एतना बरियार बा कि ,बान्ह ले चारो ओर,
जो तनिको भइल एनी - ओनी टुटेला पुरजोर
ई ह नेहिया के डोर..

कहिं केहू आस लगवले देखता काल्ह की ओर,
आस से जे विश्वास टूट गइल मनवा होला थोर
ई ह नेहिया के डोर..

माई - बाबू जुगति जे करे, कइसो कइलीं बबुआ के बड़,
दुख पराई, मन हर्षाई, घाव जिनिगी के कुल भरजाई
ई ह नेहिया के डोर..

लाल के चाल हरेला जे दुख, माई के अंचरा भरेला कुल सुख,
बाबू के पगरी भईल जे बड़, दुखवा के रतिया परेला बिसभोर
ई ह नेहिया के डोर..

अंसवारी के कवनो कनिया, आस लगवले बइठल बनिया
मने - मने करे बिचार, मिलिहें कइसन 'कुल', खरीदार
ई ह नेहिया के डोर..

कबो कहीं त राही चलते, देख औरन के हियरा छलके,
बाबा - काका कुल मिलजालें, बाटी के क्षनभर बाट हेराले
ई ह नेहिया के डोर..

मीत के बा मिताई इहवां, कुनबा में हिताई इहवां,
गांव जवार कुल सगे लागे, बिन बोलवलें आगे - पाछे
ई ह नेहिया के डोर..

बिनु रिश्ता के बात निभावे, सोचले भर से मुस्की आवे,
कहे तनि कुछु ढेर छिपावे, केहू ताके कनखी आ कोर
ई ह नेहिया के डोर..

बात ना जाने बा दूर कि नियरा, आ जाला जेकरा पर जियरा,
छिन जाला सुख - चैन हिया के, जस छछनेला चाक - चकोर
ई ह नेहिया के डोर..

एहिमा जग हेराईल बाटे, जाने - अनजाने भरमाईल बाटे,
आपन - आपन नेह निहारे, का जशोदा का माखनचोर
ई ह नेहिया के डोर..

श्वेता पाण्डेय मिश्र 'खुशबू'

बूढ़ा बूढ़ी

बसलें बिदेश बेटा, बेटी ससुरारी,
सोच तानी कइसे बीती आपन बुढ़ारी ।
एतना न सोचा धनी, बात ई तिखारी,
मजे - मजे संघे बीती आपन बुढ़ारी ।

बेटा जन्मलें सोचलीं, लाठी बनि के रहियें ।
कब्बो जो गिरब हम ऊ हाथ बढ़ि थमियें ।
बीतल उमरिया दुई जन भईलीं उन पे भारी ।
सोच तानी कईसी बीती आपन बुढ़ारी ।

हंसी बोल बतिआवत बीती ई बुढ़ारी ।
एतना न सोचा धनी, बात तू तिखारी ।
मजे - मजे संघे बीती आपन बुढ़ारी ।

घर में बसा तू रखिहा नेहिया निसनिया ।
रात दिन हम करब खेतिया किसनिया ।
रोटिया बनिईहा तू हम काटब तरकारी ।
ऐहि तरे मजे - मजे बीती ई बुढ़ारी ।

एतना न सोचा धनी, बात तू तिखारी ।
मजे - मजे संघे बीती आपन बुढ़ारी ।

बेटी से सोचलीं सगरी कहीं मन के बतिया ।
नाती नतिनियन ख़ातिर तरसे ला छतिया ।
ऊहो अझुराईल हऊवे ससुरा दुआरी ।
सोच तानी कइसे कटी आपन बुढ़ारी ।
सगरो भुला तू सोचा हऊ महतारी ।

एतना न सोचा धनी बात तू तिखारी ।
मजे - मजे संघे बीती आपन बुढ़ारी ।

आवा लगे हम तोहकें बातु समझाईं ।
लोक लाज पूत बेटी जग के कमाई ।

सात जनम के लिखना हवे सब पे भारी ।
आपन त साथे बीती सगरी बुढ़ारी ।

एतना न सोचा धनी, बात तू तिखारी ।
मजे - मजे संघे बीती आपन बुढ़ारी ।

बसलें बिदेश बेटा, बेटी ससुरारी......

श्वेता राय

जमाना

जमाना भईल जाता बाउर
अंजुरी प छाटांत बा चाउर

तिलक बरईछा में मांग बा मीट, दारू
फेल बा पुआ, पकवान आ जाउर
जानवर, पंछी सब दहशत मे जीयत बा
केतना कठोर होत जाता करेजा अब राउर

मोह, दया पर बर्फ जम गोइल बा
एह गर्दिश में कईसे होई करेज़ा दनाऊर

पहिले पुअरा, डांठ पर नीद सुकून रहे
टेंशन में कांटा लागे बेड, सोफा गोनाउर

बहिन, बेटी क हिस्सा खा सोशल मीडिया
बंद भइल मोटरी, गठरी, पकवान, पाहूर

गेस, लमटेन, दिया बाती, हेरा गोइल
बिजुली से बढ़ता गर्मी, देहिया भइल खटाउर

पेड़ के छाया नईखे अब शहर में
आरी, टांगा भईल जाता ढीठाउर

पढ़े के एज में सब बिजी बा रील में
छने - छने युवा पीढ़ी भईल जाता पीटाउर

सदानंद गाजीपुरी

बे - मौसम बरखा

छप्पर टपके, घर बह जाला,
किस्मत लिखे बेमेल सब ।
बरखा अब आशीष ना लागे,
डरे किसान मजूर वोहसे अब ।

कहले साहब “विकास करब हम”,
कटले पहाड़, पेड़ चबाइले सब ।
धरती माई पुकारत, चीखत रहली,
पर साहब के कान बहिराइल अब ।

शहर में एसी चल रहल बा,
रस्ता सूखल, ड्रेनेज बढ़िया सब ।
गांव में बालू ओढ़ल खेत,
नरक बनल सागरो जिनगिया अब ।

अमीर के छाता रंगीन बा,
भींजत भाग्य लेके गरीब सब ।
मजूर किसान के हड्डी गल गइल,
धान वान बहा गइल नीर लेके सब ।

लाट साहेब पोस्ट करेलन "रेन वाइब्स !”,
कप में कॉफी, शीशा घर में बैठ के सब ।
गरीब कहेला “भगवान, रुक जा”,
टूटल छप्पर, बाढ़ आइल खेत में अब ।

बेमौसम बरखा अब गीत ना,
एगो चेतावनी बन गइल,
छत के ऊपर मॉल चमकल ।
नीचे किसान के खेत डूब गइल अब ।

साहब बनवनी कारखाना, टावर,
पर भूलनी धरती भी जिंदा हऽ सब ।
प्रकृति अब बदला लिहे वाली,
हर बूँद में दिखाइले गुस्सा बाड़ी अब ।

ई विकास नाहीं विनाश के लहर,
जवन बहावेला रस्ता सुखी वुखी सब ।
लाट साहेब अबहियो ना समझबऽ,
त बेमौसम बरखा सबके ले डूबी अब ।

छप्पर टपके, घर बह जाला,
किस्मत लिखे बेमेल सब ।
बरखा अब आशीष ना लागे,
डरे किसान मजूर वोहसे अब ।

तौसीफ़ अहमद,
ब्रह्मपुर, बक्सर, बिहार

सबके मनमें लाखों पेंच

झूठ कहीं त सब कोई पूजें,
साँच कहीं त लागे ठेस ।
झूठ साँच में समय गुजारी,
पग पग देखीं बदलल भेष ।
केहू के मन साफा नइखे,
रातों दिन हो तावे क्लेश ।

हर कोई बावे अझुराइल,
सबके मन में लाखों पेंच ।।

कलयुग के काली के महिमा,
हमरें जामल पाठ पढ़ावे ।
हम मोट मीठे रह गइनी,
ई मेंही चीनी कहलावे ।
जारी रोज चलावेला ई,
बोले सब कुछ देहब बेच।

हर कोई बावे अझुराइल,
सबके मन में लाखों पेंच ।।

केहू ना मानेला कहना,
सबके चाहीं गाड़ल गहना ।
उलटा पुलटा भाखा बोले,
भायेला ना रोटी तियना ।
हरकोई चाहे बंटवारा,
रोजे झगड़ें फेटा खेंच ।

हरकोई बावे अझुराइल,
सबके मन में लाखों पेंच ।।

टूटल बा नल रोज सुनाता,
घर के सबे लोग नापाता ।
केहू के ना चिंता बावे,
बहरा से पानी खींचाता ।
बबुआ जी से कहले मुश्किल,
बे बाते हीं पटकस रेंच ।

हरकोई बावे अझुराइल,
सबके मन में लाखों पेंच ।।

टुकुर टुकुर देखेंनी सबके,
करनी धरनी अपना मन के ।
आगा पाछा के सोंचेला,
लालच बावे सबके धनके ।
हम सिधवा सीधे रह गइनी,
का टोकी, बोलेला फ्रेंच ।

हरकोई बावे अझुराइल,
सबके मन में लाखों पेंच ।।

अनिरुद्ध कुमार सिंह
धनबाद, झारखंड

मन के आस जनि टूटे पावे

भांति - भांति के लोग इहां बा

भांति - भांति के भोग इहां बा
केहू बइठल काटे चानी
केहू के बा चुअत पलानी
जल के बीचे फंसे मछरिया
जहां बकुलवा ध्यान लगावे
मन के आस..................।

कहीं सिकारी हठ से बाटे
कहीं पुजारी मठ के चाटे
सिकारी घात में बइठेला
पुजारी घात से पइठेला
दूनों के बा एक डहरिया
फंसल सिकार न छूटे पावे
मन के आस..................।

कुछ के हाथे चहकत माला
कुछ के हाथे झलकत छाला
चेटे अमीरवा चहकेला
पेटे गरीबवा डहकेला
घूमे दूनों बीच बजरिया
मुंह के कवर न लूटे पावे
मन के आस ....।

केहू खातिर जग मेला बा
ई केहू बदे झमेला बा
केहू खूने के चूसत बा
केहू खूने बिनु मूअतबा
आवे कतनो कठिन बयरिया
चलत सांस जनि घूटे पावे
मन के आस................. ।

कतने पानी - पानी कइले
कतने बेपानी हो गइले
केहू चूसत खून आन के
केहू मांगत भीखि जान के
लपकत दूधारी तलवरिया
'कश्यप' खलिसे लाज बचावे
मन के आस...................।

डॉ जनार्दन चतुर्वेदी
बलिया (उ.प्र.)
9935108535

सोंची कइसन गाँव रहे

बड़का बरगद के छाँव रहे,
सुख दुख बाँटें के ठांव रहे ।
बाबा चाचा के पाँव रहे,
बबुआ सुनला के चाव रहे ।

सुंदर कोमल स्वभाव रहे,
सब केहू के परभाव रहे ।
कनिया, दुलहिन बोलाव रहे,
भौजी से बहुत लगाव रहे ।
सोंची कइसन गाँव रहे ।।

घर से हट दूर बथान रहे,
सटले बड़का खलिहान रहे ।
पुअरा मानी सुख खान रहे,
सूतल बैठल मुस्कान रहे ।

आई पंडी जी मान रहे,
हर पूजा नेग बिधान रहे ।
पंडी जी के जजमान रहे,
बोलस जय हो कल्याण रहे ।
सोंची कइसन गाँव रहे ।।

मीठा चूड़ा जलपान रहे,
दूधे सानी नेवान रहे ।
लड्डु बतासा मिष्ठान रहे ।
भोज भात परधान रहे ।

डेहरी में भरल धान रहे,
दउरा में चाउर खान रहे ।
दउरी पीसल पीसान रहे,
डलिया, मौनी, सामान रहे ।
सोंची कइसन गाँव रहे ।।

पाहुन के कतना मान रहे,
बाहर भीतर गुनगुना रहे ।
ससुरारी मानी धाम रहे,
आते जाते परनाम रहे ।

का आन रहे, का शान रहे,
सगरे लागे की जान रहे ।
मिश्री से मीठ जुबान रहे,
जीवन में सदा उड़ान रहे ।
सोंची कइसन गाँव रहे ।।

अनिरुद्ध कुमार सिंह

का का बेचाता

संसार के बाजार मैं
ए मनई का का बेचाता ?

सांच बेचाता झूठ बेचाता
पाखंड में पड़ि के जूठ बेचाता,

कौड़ी भावे काम बेचाता
नींद चैन आराम बेचाता

मान शान सम्मान बेचाता
थोड़ की में इमान बेचाता

इज्जत आबरु सब बेचाता
धरम जात मजहब बेचाता

कंठ बेचाता आवाज बेचाता
दिल अउरी दिमाग बेचाता

मजबूरी लाचारी बेचाता
केहू के होशियारी बेचाता

प्यार मोहब्बत जज्बात बेचाता
संयम, क्षमता औकात बेचाता

देखऽ नोट प भोट बेचाता
आदमी गोटे गोट बेचाता

सुबह शाम दुपहर बेचाता
खुलेआम जहर बेचाता

परिवार संगे मकान बेचाता

दुआर खेत खरिहान बेचाता

सुनऽ मनई रिशु के कहनाम
तेरह के भाव में जान बेचाता ।

रिशु कुमार गुप्ता
कसियां, डुमरांव, बक्सर

कण - कण में राम जन - जन में राम

अब बाजल बधाई घर - घर मे लवट के श्रीराम अइहे,
रावण वध कइके लवट राज भवन अयोध्या धाम अइहे ।

जगत के कण - कण में बसेले आज श्री राम रघुराई,
जन - जन के मुख आ हिया आज खाली राम नाम कहीहे ।

जगमग - जगमग सजल बा नगरी भक्तिमय आवाम,
बाट जोहेली हर घर में सबरी, कब प्रभु श्री राम अइहे ?

जीवन सफल बनावे खातिर भीड़ भइल अयोध्या धाम,
मधुर भजन अजब नजारा भक्त भजन अविराम गइहे ।

घर - घर में अब दीया जरल अजब दृश्य अभिराम,
ओराइल अगोराई जन मानस जपे नाव श्री राम अइहे ।

कौशल्या नियर नारी जपेली रामलला साँझ - भिनुसार
झिलमिल दीया जरल सजल बा रामजन्म धाम अइहे ।

बाजी रहल बा ढ़ोल मजीरा सुहावन राम भजन हर शाम,
अलौकिक घरी, राममय जन सुमद्र आम राम नाम गइहे ।

गूंजता गांव - नगर के गली आ नारा बा जय श्री राम,
विराजत हिय रामलला लोगवा भक्तिगीत अविराम गइहे ।

जगईहे प्रभु जन हियरा सत्यप्रेम, समर्पन अउरी भातृप्रेम,
जग अनुगामी राम पथ के आज मर्यादा पुरुषोत्तम अइहे ।

शशिलता पाण्डेय, सुभाषिनी
बलिया, उत्तर प्रदेश

समय

समय कब एक जइसन रहल बा ।
आजु के हालात काल्ह से एकदम अलग बा ।
काल्हू के हालात आज जइसन थोड़े रहल ।
आ का पता काल्ह का होई, कईसन होई !

जवन कुछ भी निक भल बा, आज ले बा
काल्ह बाउर हो जाए त कौने अचरज !
जे केहू आपन सगा बा, आज ले बा ।
काल्ह बैरी हो जाए त कौने अचरज !
जेतना भी हंसी खुशी बा, आज ले बा ।
काल्ह ग़म में बदल जाए त कौने अचरज !
जवन कुछ भी रूप - रंगत बा, आज ले बा ।
काल्ह इ सुघर जवानी ढल जाए त कौने अचरज !

फिर
जवन कुछ भी दुख बिपत बा, आज ले बा
काल्ह सब ठीक हो जाई, इ काहे ना मानी ।
जवन कुछ भी शोक, रुदन बा, आज ले बा ।
काल्ह जिनगी हसत मुस्कात होई, इ काहे ना मानी ।
जे केहू भी तिरस्कार - दुत्कार करत बा,आज ले करत बा ।
काल्ह उहे गले लगाई , इ काहे ना मानी ।
जेतना भी कठिन परीक्षा आ संघर्ष बा, आज ले बा ।
काल्ह सब सफल हो जाई, इ काहे ना मानी ।

सुख के दिन चार बा त दुख के दिन भी चार ही बा ।
ग़र सुख के दिन पलट जाई त दुख के दिन भी पलट जाई ।
तब चिंता कवना बात के, फिकिर काहे !
बेफिक्र होके जिहिं पूरा आस विश्वास से
समय करवट लिहि अपना हिसाब से ।

आरती पाण्डेय (शोधार्थी)
जननायक चंद्रशेखर विश्वविद्यालय
बलिया, उत्तर प्रदेश

जाड़ा आइल

अकुलाइल आ भुलाइल
जाने ई कहवाँ से आइल।
बयार का खिलखिलाइल
सभ जनन के देह सिहराइल।
रातो भर केंकुराइल
भोरे-भोर ई कुलबुलाइल।
भर रात ई बढ़िआइल
मगर भर दिन ई बिलबिलाइल।
दिन मुट्ठी में समटाइल
बाकिर काम ढेर निपटाइल।
तनिका दिन जब घमाइल
त मेट गइल सब मिलमिलाइल।
साँझ फेर पिलपिलाइल
रहल रात भर ई खिसिआइल।
सुरुज देखते लजाइल
जाने केने दो घुसिआइल।
डाल-डाल बा फुलाइल
मौसम ई जाड़ा के आइल।

अंकुश्री
8, प्रेस कालोनी, सिदरौल,
नामकुम, राँची (झारखंड)-834 010
मो0 62049 46844
E-mail : ankushreehindiwriter@gmail.com

पत्थर कोइला

करिआ कोइला
ओकर रंग बदलल
जर के लाल हो गइल ।
जतने ठंडा रहे
ओतने लहलहात
गरम धमाल हो गइल ।
केहू के गरमी
देर ले ना ठहरे
त उहे हाल हो गइल ।
पत्थर जस कोइला
आग से करत यारी
ओकर काल हो गइल !

अंकुश्री
8, प्रेस कालोनी, सिदरौल,
नामकुम, राँची (झारखंड)-834 010
मो0 62049 46844
E-mail : ankushreehindiwriter@gmail.com

सांवरी पुतरिया

कहि - कहि रोवे लगली सांवरी पुतरिया - 2
करे ला जहान काहें भेदवा ए माई - 2

जेहि रे दरदिया से सभे लोग जनमले ।
ओही तरे हमहूं त अइनी ए माई - 2
पनियो देवला काली - काली रे बदरिया,
काली मइया जग के पालनहारवा ए माई - 2
होसवा सम्हरलीं त इहे हम देखनीं
गोरके पे करे सब नाज़वा ए माई - 2
कहि - कहि रोवे लगली सांवरी पुतरिया - 2
करे ला जहान काहे भेदवा ए माई - 2

कवने गलतिया के, मिलत इह फलवा
रूपवा देखि मिले इनकरवा ए माई - 2
जेने - जेने जाई ला इहे हम पाई ला
जेकरे तनवा सुंदर मनवा काक ए माई - 2
हमरे भीतरिया देखले न लोगवा
चाहि सभके उजर - उजर मांसवा ए माई - 2
कहि - कहि रोवे लगली सांवरी पुतरिया - 2
करे ला जहान काहे भेदवा ए माई - 2

फलवा में बहुते गुणकारी इ जमुनवा
उहो केतना बाटे कारी - कारी ए माई - 2
कारी रे शरीरिया के बारे नु कन्हैया
उनुका पूजे काहे जहानंवा ए माई - 2
हमर इ रंगवा पे सभेके तिरछी नजरिया
जिनगी भइल बा दुश्वारवां ए माई - 2
कहि - कहि रोवे लगली सांवरी पुतरिया - 2
करे ला जहान काहे भेदवा ए माई - 2

रिंकी सोनी 'आतिशी'

बीत जाए घड़ी ना कहीं प्रीत के

एगो दियना तु नेह के जरावत रह,
रोशनी ठांवे - ठांवे पसर जाए द ।
कांट - कुश से भरल हर डगर में सखी
आजु चंदन के खुशबू बिखर जाए द ।।

बाँटे मजहब ना दिल के दिल से कहीं ।
सूखे संगम ना अब धरा पर कहीं ।
घोरे कोई जहर ना मन में कभी,
आजु धरती पर अमरित टघर जाए द ।।
टूट जाए लड़ी ना कहीं गीत के ।
बीत जाए घड़ी ना कहीं प्रीत के ।
प्रीत के रीत हरदम निभावत रह,
हर दामन खुशी से तू भर जाए द ।।

पात मुरझा ना जाए कहीं डार के ।
नोंक चुभने ना पाए कहीं खार के ।
बहार बनिके पतझड़ मिटावत रह,
हर कली, हर सुमन के संवर जाए द ।।

मिटे रोशनी ना कबहूँ एक पल के लिए ।
केहू तरसे ना कबहूँ जल के लिए।
नेह के नीर से प्यास बुझावत रह
चान के आजु धरा पर उतर जाए द ।

कबहूँ आए ना आँसू केहू के नैन में ।
खलल पड़े ना कबहूँ केहू के चैन में ।
बाँसुरी प्रेम के तू बजावत रह ,
हर लम्हा खुशी से गुजर जाए द ।

डॉ० रघुनाथ उपाध्याय 'शलभ'

दहेज के लोभी

बेची दिहले बाबू मोरा गारल कमाई
रहे फरमाईस सब दहेज में दियाईल
बाबूजी के पगरी अब कर्ज में दबाईल
तवो नाही माई हो सुघर बर किनाईल

रोज - रोज रतिया के दारू पिके आवेला,
मिलल नाही मोटर गाड़ी हमके फरमावेला
कहेला कि बाप तोऽर बड़का झपास बाऽ
देवेला ताना हमराले, नाऽ तोर औकात बा ।।

तोहरा से माई का आपन हम दुखवां बताई
सासत में कटता मोऽर जिनगी हो माई...

बिन मतलबवे हरदम करेला लड़ाई...
रोज - रोज हमरा के देवेला सजाई...
करिलें निहोरा माई, लऽ हमके बुलाई....
नाही त कहियो जियते ई अगिया लगाई ।।

दिहऽल दहेज जवन माटी में मिलवलस
बेची के गहना - गुरिया दारू में ऊड़वलस
घरवा में नून - तेल के रोज - रोज हाला बा
छोटकी ननदिया के ऐगो अलगे बहाना बा ।

करे नाही घर के कवनो, काम ऊ काज के
झुठही लगावत चले लहरा बे बात के..
सुने नाही केहू हमार दु:ख संताप के..
चमन देहाती तहरो परत नाही पाला बा
बेटी के कईसन ई जिनगी आभागा बा ।

पुरन्जय कुमार गुप्ता "चमन देहाती"

ग़ज़ल

(1)

बरसि जाई बदरी न तनिको पटाई ।
बुझाता कि सउँसे चंवर डूब जाई ।

करेजा में अइसन लहर उठ रहल बा
जियाई भा हमके ई अजुये मुआई ।

सुनऽ हो तनी हाल हमरो से पूछऽ
कि खलसा सवतिये के चिठिया लिखाई ।

पिरितिया के लमहर भइल बे लतरिया
भेंटा जाई तोहके त हमके भेंटाई ।

बिलाए ला, जाके मिलल नइखे उनसे
समुंदर से कहि द उ लोरवो गिनाई ।

ग़ज़ल

(2)

बीतल कुल बतिया बिसरावऽ, जाए द
अझुराइल जिनगी सझुरावऽ, जाए द ।

बतियन के पेहना में मुरचा धइले बा
छूटी नू, चल के बतियावऽ, जाए द ।

नदिया के तीरे नइया मत राखऽ, तूं
आवऽ नदिया में उतरावऽ, जाए द ।

ठटका खा के पेट गड़े जेकर, ओके
बसिये दे के पेट सोन्हावऽ, जाए द ।

हल्ला सुनिके कान बड़ा अगुताइल बा
अब त एगो गीत सुनावऽ, जाए द ।

सउँसे गंउवां में छपलस अनहरिया त
तूंहीं एगो दीप जरावऽ, जाए द ।

डॉ कादम्बिनी सिंह
शिक्षिका आ कवयित्री
बलिया

महफिल

महफिल मे हमहू मुस्कुरा देइलें ।
दुख मे केहू साथ ना देला, एहिसे आंसू छुपा लेइलें ।।

लोग के देख के लोग जरेला इंहवा
केहू के दुख देके लोग तरेला इंहवा

लेकिन अकेले मे पुछले पर दुख बता देइले ।
महफिल मे हमहू मुस्कुरा देइलें ।।

ई चका चौंध दुनिया मे दिखावा बस बाटे
जियले मे कुछ नाहीं मुवले पर पछतावा बस बाटे

दिखावा मे दु लोटा आंसू बहा देइले ।
महफिल मे हमहू मुस्कुरा देइले ।।

केकरा के लूटीं, केकरा के दबाई
आदमी से बढ के, के बा कसाई

एक दिन मुए के बा सभके ई भूला देइले ।
महफिल मे हमहू मुस्कुरा देइले ।।

कमजोर के देख के दबंगई देखावे
मीले बरियार त मुड़ी झुकावे

ई दुनिया के किस्सा सुना देइले ।
महफिल मे हमहू मुस्कुरा देइले ।।

जमील मीर
कुशीनगर

साँप

पत्थरन से दिल लगावल कबहुँओ ना नीक ह
साँप से भी ओइसहीं दूरी बनावल ठीक ह

काम आई ना कबो अनका के ताकत फ्रंट पर
रार बेसाहल बड़न से छोड़ि दीहल नीक ह ।

तर कइल गरमी में आपन घर त नीमन हइए ह
आगि दोसरो के बुतावल मनुजता के लीक ह

क्रांति जब होई जरूरी हम मिलबि आगे सदा
बेवजह दिल के दुखावल कइसहूँ ना ठीक ह

का पता कब के कहाँ दे दी पटकनी जोर से
हर बखत अङुरी करेवाली रहन ना नीक ह

ए तरे सोगहग विमल तहरा कबहुँओ ना मिली
हर घरी अपनो के धूँसल ना निमनका लीक ह

डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

दुख के गठरी

मन में धधकत अगन के बुतावे परी
दुख के गठरी भी हँस के उठावे परी

घाव इक दिन भरी ई भरोसा रखीं
रोज मरहम समय पर लगावे परी

घाम पानी से चाहीं ले बाँचे अगर
अपना अँगना में छान्ही छवावे परी

दूर तहरा से भइला पे फाटे हिया
लौट के जल्दिये तहरा आवे परी

दोस्त बनला के हमरा इहे शर्त बा
दोस्ती के फरज बस निभावे परी

राम नाथ बेख़बर

बिहान

केहु कहलस कि पूरा अरमान हो गइल
आधिरतिये बुझाइल बिहान हो गइल

जवन पोंसल रहल बा नन्हइयें से ऊ
कल्ले कल्ले सपनवाँ सेयान हो गइल

साँच के साथ धइले उमिर चलि रहल
झूठ बोलल ऊ मनई महान हो गइल

का पता कब्बों खाले ढकेलिये दिहें
पोढ़ अतना भरोसा, बेजान हो गइल

पी के असरा के पानी जियल जा रहल
खाके धोखा जिनिगिया जियान हो गइल

थूकि के चाटि के फेरु थूकल - चाटल
का कहल जाउ बेहया के खान हो गइल

टेढ़ नीयत लगे जइसे धनुहीं 'घायल'
बात हियरा के बिषिआइल बान हो गइल

कृष्णदेव घायल

गजल

गवाँई जान ऊ आपन , करी जे रार हमनी से
भरम में जनि रहऽ कि ना उठी तलवार हमनी से

कि अब हमनो क' आपन फौज बा, आपन मसीहा बा
सहाई के तरे केहू क' अब ललकार हमनी से

सिंहासन छोड़िके सूरुज के आवे के पड़ी इहँवाँ
रही कहिआ ले कन्नी काटिके उजियार हमनी से

शहर हमनी के भुच्चड़ कहि रहल बा एह् बदे, पंचों
कि टट्टी में सिराई ना पढ़ल अखबार हमनी से

चले कऽ लूर ओकरो आ गइल - ई तब कहल जाई
उठाई डेग जहिआ पूछिके सरकार हमनी से

शशि प्रेमदेव
9415 830025

ज्ञान

ना पूछऽ का छुपल बा गगन से, बा ज्ञान में ।
हर साँच के उजास मुखड़ा, बा ज्ञान में ।

दुनिया के रंग, धरम-करम, साँच आ नेकी के बात,
जे सोच के दीया जले, ऊ बात सब, बा ज्ञान में ।

कागज़ ना खाली, दिल-दिमाग़ के भी होखे सीख,
जवानी के तरीका, बुजुर्गी के रीत, बा ज्ञान में ।

तलवार से ना हर दुविधा के होला हल,
शांत बुद्धि आ निमन निर्णय, बा ज्ञान में ।

जवन ना डोले आँधी-पानी में, अइसन दीप,
करे जोत से बात, ऊ आग भी, बा ज्ञान में ।

'तौसीफ़' कहे ना ऊंच-नीच देखऽ, ना जात,
इंसान के असली मोल, रंग सब, बा ज्ञान में ।

तौसीफ़ अहमद
ब्रह्मपुर, बक्सर, बिहार

लघुकथा

करनी

मूल कथाकार : सआदत हसन मंटो

अनुवाद : डॉ. रामरक्षा मिश्र विमल

लूटल माल बरामद करे खातिर पुलिस छापा मारे शुरू कइलसि । लोग डर का मारे लूटल माल रात का अन्हारा में बाहर फेंके लागल । कुछ अइसनो लोग रहन , जे अपनो सामान मोका निकाल के हटा दिहले, ताकि कानून के लफड़ा से फरके रहसु ।

एक आदमी के ढेर दिक्कत भइल । ओकरा पास चीनी के दू गो बोरी रहे जवन ऊ पंसारी का दोकान से लुटले रहे । एगो त जइसे तइसे ऊ रात का अन्हारा में बगल वाला इनार में फेंकि आइल, बाकिर जब दोसरकी ओमें डाले लागल त अपनहूँ चलि गइल ।

हल्ला भइल । लोग जुटल । इनार में डोरि लटकावल गइल । कुछ लोग इनार में ढूकल आ ओह आदमी के बाहर निकाल लिहल, बाकिर थोरहीं देर बाद ऊ मर गइल ।

दोसरा दिने जब लोग पीए खातिर इनार से पानी निकालल त ऊ मीठ हो गइल रहे । ओही रात ओह आदमी का कब्र पर दीया जरत रहे ।

सांड़

अनिल कुछ जरूरी समान खातिर जनता बजार जात रहलें । बाजार जाय के राह में कुछ सरकारी मकान दूनों ओर रहे । सरकारी मकान सब के नियरा जसही अनिल पहुंचले त ऊ देखत बाड़ेन कि एगो करिया मोटा तगड़ा सांड ओने से एने आवत बा ।ओने से एक जना ऐने आवत रहलें त उनका देख के सांड मुड़ी ना झटलस ।ई देख के हिम्मत बढ़ल आ ऊ धीरे - धीरे आगे बढ़े लगलें । सांड़ के बांये ओर से आवत देख के ई दायां ओर खाड़ा हो गइलें आ सोचले कि सांड़ आगे पार हो जाव त हम ऐने आगे बढ़ब । बाकिर ई का ! सांड़ बायां ओर से इनका ओर बढ़ के चल आइल ।सांड़ के सींग लगभग एक सवा फीट से कम ना होई । सांड़ आ अनिल के बीच के दूरी खाली दू फीट रह गइल रहे । अनिल के दिल जोर - जोर से धड़के लागल । कंठ सूखे लागल। ऊ जहवां खाड़ा रहन उहां के मकान के गेट रहे जेह में अन्दर से सिटकनी लागल रहे । केहू अन्दर से नजरो ना आवत रहे । ऊ हिम्मत क के आपन गेरूआ रंग के गमछा से हट - हट कह के हटावे लगलें । सांड़ उनका ओर देखत रहे आ ऊ सांड़ के । पता ना काहे सांड़ आधा मिनट के बाद आगे बढ़ गइल । अनिल के लागल कि सांड़ कवनो दैविक शक्ति के आदेश के पालन करत होखे । अनिल के भगवान भोलेनाथ के महिमा के साक्षात दरसन हो गइल । ऊ मने - मन भोलेनाथ के गोहरावत आगे बढ़े लगलें ।

मनोकामना सिंह अजय

केहू ना मानेला

एक बेर एगो शहर में बहुत बड़हन व्यापारी रहत रहन, उनकर नाम रामप्रवेश रहे । भरल पुरल परिवार रहे जवना में उनकर पत्नी, बेटा - पतोह आ पोता लोग रहे । रामप्रवेश जी से परिवार के सभे लोग खूब नेह - स्नेह राखत रहे । परिवार बहुत हँसी - खुशी से रहत रहे । घर मे कवनो तरह के कमी ना रहे ।

एक बेर रामप्रवेश जी किहा उनकर घरेलू पुरोहित (पण्डित) के आगमन भइल । पण्डित जी के खूब सेवा - सत्कार भइल । सेवा - सत्कार से पण्डित जी बहुत खुश भइले । बइठका में पण्डित जी आ रामप्रवेश के बातचीत होत रहे । पण्डित जी कहले कि - राउर परिवार त रउरा के बहुत मानेला बुझाता, राउर सेवा सत्कार भी नीमन लागल । बाकिर हम कइसे मान ली कि राउर परिवार रउआ के मानेला ?
रामप्रवेश कहले कि - हमार परिवार हमरा के सचहुँ बहुत मानेला ।

पण्डित जी कहले कि हम कइसे मान लीं ? राउर परिवार रउआ के मानेला की ना ई पता करे खातिर एगो नाटक करे के परी । रउआ मरे के नाटक करब बाकिर हम देख लेब । दोसरा दिना भोरही रामप्रवेश जी पानी पियला के बहाने उठले आ झूठो के जमीन पर गिर गइले आ मरे के नाटक कइले । पूरा परिवार ई सब देख के रोये - बिलखे लागल । तब तक ले पण्डित जी पहुँच गइले आ कहे लगले कि ई अनहोनी कइसे हो गइल ? पण्डित जी के त मालूम रहे कि ई नाटक होता । पण्डित जी रामप्रवेश के परिवार से कहले कि रामप्रवेश जी के शरीर मे फेर से जान आ जाई । हमरा भीरी एगो जड़ी - बूटी बा, परिवार के जे लोग खाई उ मर जाई आ रामप्रवेश जी जिंदा हो जईहे, उनका शरीर में जान आ जाई । पण्डित जी एगो जड़ी निकाल के उनका मेहरारू भीरी गइले कि रउआ खा लिही । मेहरारू कहली कि हम ना खाइब, हमार जान प्यारा बा । फेर पण्डित जी उनका लड़का भीरी गइले की तू खाल ! लड़कवा भी खाये से इनकार कर देलस । फेर उनकर पतोह के कहल गइल कि तू खाल ! उहो तइयार ना भइली । तब पण्डित जी उनकर पोता भीरी गइले आ कहले कि तू जड़ी खाल तब बाबा के जान बाँच

जाई । रामप्रवेश के पोता कहलस कि - ए पण्डित जी रउआ खालीं, रउरा आगे पीछे त केहू नइखे.. !

एतना कइला के बाद रामप्रवेश से पण्डित जी कहले कि अब नाटक छोड़ी आ उठ के खड़ा हो जाई । रउआ देख लेनी नू, रउआ के केहू ना मानेला परिवार में । सभे केहू के राउर पइसे से प्यार बा । जब रउआ खातिर जान देवे के बात आइल त घर के केहू तइयार ना भइल एह नाटक से साफ पता लाग गइल कि रउआ खातिर केहू आपन त्याग नइखे कर सकत । रउआ कहत रही कि हमार परिवार हमरा के बहुत मानेला ।

राजेश भोजपुरिया

तब देखावटी ना, दिल के रिश्ता होखे

जाड़ा रजाई में घुसे के खूबे कोशिश करत रहे । रजेसर जाड़ा के रोके खातिर कुल्हि जतन करत रहलन । रजाई के ठेहुना तक ले जाइ के खींच - खींच के लपेट - लपेट के जाड़ा के भगावे के उपाय करत रहलन ।

आसमान के सगरी तरई मैदान छोड़ के भाग गइली स । खाली शुकउआ भोर होखे के इंतजार करत रहे ।

भोरे भोरे चररर मररर के आवाज से रजेसर के ओहाँई खुल गईल । इ उँखी के कोल्हू से निकलल आवाज रोज भोरे - भोरे रजेसर के जगा दे । जगनू काका   , अउरी माही बो काकी उँखी पेरे खातिर   रोज भोरे - भोरे देवनंदन बाबू के कोल्हाडे आ जाए लोग । रजेसर के दुनो बैल कोल्हू के चारों ओर घोरियावे लागे । करीब एक कराह उँखी के रस आधा माधा ख़ौल के खदकही वाला रहल, कराहा के बरद माहिया छाँनत माही बो काकी के देखि के रजेसर बाबू, अनासे पूछी लिहले कि -

सुगनी के का हाल बा हो काकी ?

ठीके बे...बाबू ! कल्हिये ससुरा से आइल बिया ।

इतने बात कहिके, माही बो काकी अपना अंचरा से अपना आँखि के लोर पोछे लगली ।

रजेसर के लाग गईल कि कउनो न कउन बात त बा ।
जब उ खोदि - खोदि पूछे लगन त माही बो काकी सब कुछ बता देहली ।
सुगनिया के शादी लरकइये में हो गइल रहे । ब्याह के दिन बड़ा मुश्किल से माड़ो में बैइठ पवले रहे । ब्याह के दो - तीन गो रस्म पूरा भईल तबले उ सूत गईल रहे ।

ब्याह के बारह बरिस बाद गवना भइल त ससुरा गइल ।

बड़ी मुश्किल से छः सात महीना ससुरा में रहल होई , ओकर पहुनवा कल्हिये के ले के आइल बाड़ ।

ए बाबू... सुगनी कहत रहे कि चले के बेरी ससुर जी कहले ह कि अगली बेर जे साइकिल लेके ना अइबू त घर में घुसे ना देब ।

रजेसर देवनंदन बाबू के अकेले लइका रहन । गांव के जमींदार के बेटा होइले के बावजूद उनका करेजा में मजदूर , मेहनतकस लोगन के खातिर बहुते जगह रहे । इहे कारण रहे कि बड़ से छोट ले पूरा गांव उनके बेटा जइसन जाने ।

दूसरे दिन सुबहे - सुबहे रजेसर बाबू , एगो नया हरक्यूलिस साइकिल लेके माही बो काकी के दुवरा पहुँच गइले । रजेसर बाबू के अपना दुवारा देख के सब केहू भौचकिया गइल । माही बो काकी बड़ा दुलार से रजेसर बाबु के बसखट पर बइठवली । डालिये मैं भेली के एगो टुकड़ा अउर एक गिलास पानी दे के अपना अंचरा से उनकर लीलार सोघरा के, दुलार करे लगली ।

उनके आंखि के सोझा लरिकाइ वाला देवनंदन बाबू के बबुआ लउकत रहले, जेके सरसों के तेल से माही बो काकी रोज - रोज मीस - मीस दुलारे ।

माही बो काकी रजेसर बाबू से पूछली कि, "ए बबुआ भोरे - भोरे एने कइसे आवे के भइल ह ?"

जबाब में रजेसर बाबू अतने कहले कि ए काकी पाहुन से मिले चलि अइनी ह । सोचनी ह कि सुगनीयो के देख लेब, अ पहुंनो से मिलि लेब ।

माही बो काकी बोलवली त, सुगनी के पहुँनवो आके उनके जरि बइठले ।

कुछ देर रुकले के बाद रजेसर बाबू पैदले अपना घर की ओर जाए लगन त , सुगनी बोल परल ।

ए माई..! रजेसर भईया से बोल द कि सइकिलिया ले ले जाए । बुझा ता कि सइकिलिया ले गइल भुला गइले ।

रजेसर इ कुल बात सुनत रहले । पांछे मुड़ के रजेसर बाबू जानबूझ के जोर से बोलले कि सुगनी के पहुँनवो सुन ले - ए काकी ! पाहुन से बोल दिह कि ये सइकिलिया के उ लेहले जईहे । लेकिन आज के बाद सुघरी से केहू ई बात ना बोली कि बिना साइकिल लेहले अईलू, त ससुरा ना अइबू ।

राजेश श्रेयस

सब कुछ बदल गइल

भिनहीं - भिनहीं उठके सबसे पहिले बैल आ गाय क पगहा खोल के नाद पर बान्हल तब लोटा में पानी लेके फराखित / दिशा मैदान होखे सरेही में चल जाव सब केहू फेरू लौट के हाथ मांजे खातिर माटी रहे ओसे हाथ मांज के नीम पर से लाठी से आ चाहे चढ़िके नीब क दतुअन तुराव दतुवन कइला क बाद तुरंत चार अंजुरी पानी पीके खरमेटाव हो जाव ।

ओकरी बाद सबसे पहिले गोबर वाली खांची उठा के गोबर उठावल जाव गोबरो क एगो अलगे सुगंध रहे ओकरी बाद खरहर उठे आ सारी (गोशाला) झराव । ओकरी बाद लेहना कटाव फेरू तबले केहू चाचा भैया आवे त चार गारी लेबो करे कि अबहीं ले पता ना का करत रहल ह कुल लइका स्कूले जाए लगलस आ ए बाबु साहेब क अबही ले लेहने कटाता ।

डरने छोरी बांधत झोरा काखीं में सइहारत दौरत स्कूले पंहुची जां । ओइजा प्रार्थना में लागे खुसुर फुसुर होखे कि का ए भाई भूटिया पंडिजी क सूरदास जी क जीवनी याद हो गइल बा आ करियवा मास्टर साहब क सवाल हो गइल बा । ओकरी बाद क्लास में आपन - आपन बोरा बिछा के बैठी जा लाइन सीधा करावे क जिम्मेदारी क्लास मनिस्टर क रहे । आरे भाई ओह बेरा क उ कलक्टरे रहल । जिन जाना पर मन बिगरि जाव उनका के त क्लास टीचर से धोवाइए देसु ।

बाकी कबो - कबो एइसनों बहादुर से भेंट हो जाव कि मिनिस्टर साहेब के धो धा के ठीक क देव बहादुर, आ फेरु आठ नौ दिन ले स्कूले छोड़ि देव आ फेरु जब उ आवे त मिनिस्टर साहेब ओकर पकिया चेला बनि जास आ एइसन बहादुर बड़ा कारीगर होखे स जवना बेरा और लरिकन की लगे दस पैसा आ बीस पैसा ना रहे ओह बेरा उ पांच - पांच रूपिया लेके आवस । इ एइसन बहादुर लरिका रहलस कि इन्हनी की डर से गोंहू आ चना सरसों क पयेर चाहे जेतना लोग अगोरे इ आपन युक्ति लगा के ओतना क इंतजाम क लेंवस आ उ अब मिनिस्टर (मानीटर) की संगे मिलि के आम अवाम की उपर जुर्म शुरु क देवस । अब त एह पार्टी की संगे पैसा क बल दबंगई क बल आ बुद्धि क बल तीनों एक संगे मिल गइल अब आपन दशा पढ़वइया लो देखे लोग ।

इ त रहल ह पराइमरी ले क काथा । एकरी बाद पांच पास क टी सी लेके आ मिडिल स्कूल में नांव लिखावे खातिर दोसरा गांवें जाये के परे । काहेकि आजौ की नियर निगिचा - निगिचा मिडल स्कूल ना रहे। नांव लिखावला क बाद किताब खोजाव आ

जेकारा के किताब मिल जाव कहीं उ त जगि जीत लेव । आ जेकारा ना मिले ओकरी घर क लोग खोभसी के मुवा देबे । एह ससुरा के खयिला आ सुतला से आ सरेही माकला से फ़ुरसत मिली तब न किताबी खोजी । इ का पढ़ी । अब उ लरिका मुंह लटका के आ बुरबक नियर ताके लागे । आ जेकरा किताब मिल जाव उ त बुझाव कि जग जीत ले ले बा । ओह पावल किताब के लेके आ आटा क लेई बना के लेके बैठ जाव आ ओह किताबिन क मरम्मत क क के दफ्ती क गाता लगा - लगा के चक - चक क देबे में जुट जावस ।

फेर स्कूले जाये क बेरा अपनी -अपनी गोल की घर से संगी साथी क संगे मसूती में झोरा में रूमाल में रोटी आ अचार ले - ले के गाना गावत सूरदास आ मीरा क पद गावत पहुंच जावस ।

दुपहरिया में खाये के छुट्टी की बेरा आपन - आपन गोल बना के बइठी जावस आ जेकरी रूमाल में परवठा आ भुजिया रहे ओकर त लुटा जाव । मस्ती में आपन सूखल पाकल खाके फेर ओला - पाती , चिका - कबड्डी क मजेदार खेल होखे । आ फेरू घंटी बाजला पर मुंह हाथ धो धा के पढ़ाई होखे । आ फेर छुट्टी भइला पर घरे आके झोरा बोरा दलानी में फेंक फांकी के खेले निकल जाइजा । आ जे धरा गइल उ त मने - मने अपना के गरिआवत सानी पानी आ गोबर में भिड़ जाव ।

कुछ भी रहे लेकिन बाड़ा मस्ती रहे । ओह बेरा की मस्ती के इयादी क के मन खाली - खाली हो जाता । एह बेरा की लरिकन क भौतिक सुख आ मुरझाइल चेहरा देखि के बड़ा मोहो लागेला बाकी का करो केहू आजु ।

बेरा बदल गइल समय बदल गइल बाकी त सब कुछ ठीके बा ।

फेरू आगे क वृतांत अब अगिला बेर तवले खातिर आप सबके राम राम ।

संतोष दीक्षित

भोला नाथ गहमरी : एगो व्यक्ति ना एगो विचार आ एगो युगबोध

प्रकृति कऽ अलगे - अलगे रूप में अनुभूति भइल , ओकरा के मिठास भरल भासा में बखान कइल अइसन पेंच वाला काम ह ऽ कि एकरा के उहे करि सकेला जेकरा के प्रकृति के विशेष वरदान मिलल होई । भोजपुरी गीतन कऽ सम्राट के रूप में मशहूर भोला नाथ "गहमरी" जी के सभे लोक धुन के बारे में पूरा - पूरा जानकारी रहे । इहे कारन रहे कि उहाँके लुप्त हो रहल भोजपुरी गीतन के धुनन के नया - नया गीत रचके फेर से जीवित करे कऽ भगीरथ प्रयास कइलन । उनकरा गीतन में जवन प्रवाह , बोधगम्यता आ अभिव्यक्ति लउकेला उ आउर केहूँ के गीत में शायद ही नजर आ सकेला ।भोजपुरी साहित्य में गहमरी जी कऽ समय के "गहमरी युग" निर्विवाद रूप से मानल जा सकेला । उनकर गीत पढ़ के आ सुन के सभई के महसूस हो जाला कि उनकर लिखल गीत भोजपुरी दुनिया क ऽ तहे दिल से निकले वाली सभे भावना के अभिव्यक्ति ह ऽ । ई पूरा भरोसा से कहल जा सकेला कि स्व. महेन्दर मीसिर जी के बाद वाली पीढ़ी में भोला नाथ जी आपन अलगे पहिचान बनावे में कामयाब हो गइली जेकरे चलते उनकर गीत आम मनइ कऽ गीत हो गइल । उनकर गीत क ऽ एगो बड़हन खासमखास बात रहल कि उनकर हर गीत बोधगम्यता के संगे - संगे रिदम से भी जुडल बा । एकरे चलते कवनों गवइया बिना बतवले आ बिना समझवले उनकरे गीत के आसानी से स्वर दे देत रह जा । इहे कारन रहे कि इनकर गीत गा - गा के बहुते लोग के रोजी रोटी चलत रहे ।पटना , गोरखपुर, लखनउ, इलाहाबाद वाराणसी आ अउर रीवाँ तक के आकाशवाणी कलाकार के माध्यम से कम से कम तीन सौ गीतन क ऽ लुत्फ आम श्रोता उठवले । उनकरे कलम से पूरबी, कहँरवा, झूमर, खेमटा, बिदेसिया, होली, चैता, कजरी, जंतसार, बियाह गीत आ सोहर के संगे देवी - गीत तक निकलल जेवन मोटा मोटी सभे हिट गीत हो गइल ।

कवि के साथे साथ उहाँ के कला के भी पारखी रहली । उहाँ के कबो एह बात से परहेज ना मनली कि उनकर गीत के उँचाई तक पहुँचावे में गायक लोगन क भी हाथ रहे । स्व. मोहम्मद खलील , ललन सिंह "गहमरी" , ठाकुर चन्द्र मोहन सिंह , इलाहाबाद क उमेश चन्द कनौजिया , पूर्वान्चल कऽ पुरुषोत्तम सिंह, कामेश्वर सिंह, आनन्द सिंह, सरोज बाला, संज्ञा तिवारी , सरिता शिवम , निशा श्रीवास्तव , अर्चना श्रीवास्तव , गायत्री पाण्डेय , कनकलता अउर मधुबाला जइसन गवैया लोगन के अपने गीतन के सुरीली आवाज से सजावें सवारें खातिर गहमरी जी सब समय खुले मन से आभार मानत रहलीं । भोजपुरी गीत सम्राट गहमरी जी कऽ जीवन में संघर्ष के सामना सब समय करें पड़ल । बिना संघर्ष

के केहूँ क ऽ व्यक्तित्व में निखार आ चमक आई ना सके । उनकर इहें संघर्ष ताउम्र उनका में शक्ति के संचार कइलस । उन्नीस बरस क उमिर में उनके माई बाबू जी से हजारों मील दूरे नौकरी करे पड़ल । विषम परिस्थित में भी छल कपट से दूर रहिके केहूँ के भी मोह लेबे वाला गुन उनके पास रहे ।लोक जीवन वाली संस्कृति उनका रोम - रोम में रचल बसल रहे । इहो उनकर खास गुन रहे जवना कारन कवनों कवि सम्मेलन उनका बिना अधूरा लागे । कुछ समय बदे सिनेमा कऽ रंगीन दुनिया से जुड़े के मौका मिलल रहे । अपने गीतन में चटपटा रंग दिहले के बावजूद भी साहित्य के दामन से हरमेश जुड़ल रह गइले ।भोजपुरी भासा में उनकरा नियर शायद ही केहूँ गीत संकलन दे पावल । भोजपुरी साहित्य क ऽ श्रीवृद्धि में उनकर सबसे बड़हन योगदान रहे जेकरा कारन उनके सब समय इयाद कइल जाई । भोजपुरी क ऽ महापंडित डा. कृष्णदेव उपायाय आ भोजपुरी कऽ मशहूर रचनाकार एवम् छंद विद्या क ऽ मर्मज्ञ कविवर चन्द्र शेखर जी क ऽ सलाह आ सहयोग खातिर उहाँ के तहे दिल से आभार प्रकट कइले बानी ।

वैसे गीतकार भोला नाथ "गहमरी" जी प्रकृति श्रृंगार आ विरह क मूल रचनाकार कऽ रूप में अपना के स्थापित करे में सफल भइल बानी । श्रृंगारिक गीत में उनकर आध्यात्म असीमित उँचाई तक झंडा फहरावे में सफल भइल बा ।

"कवने सुगना पर गोरी तू लुभा गइलू हो ।"

गहमरी जी कऽ गीत में कही फाँक ना मिले जे केहूँ कवनो मशविरा देबे के सोच सके । उनकर एगो विरह के गीत बतौर नमूना देखि जा :--

मोरा बिहरेला जीया, पिया तोहरे बिना ।
जबसे बंधी तोसे नेहिया के डोरी,
बिरहा जगावे दरद चोरी - चोरी,
जियरा जरेला जइसे जरेला जिया ।
मोरा बिहरेला ....।

गहमरी जी क ऽ लिखल बिरह गीत में उहाँ क ऽ विशेष प्रतिभा क ऽ साफ झलक मिलेला । प्रेयसी क ऽ आपन प्रेमी के नेह के बारे में जवन ख्याल उपजेला ओकर साफ झलक गहमरी जी कऽ गीत में लउकेला -

महुआ के फूल झरे पलकन के छहिया,
सारी रात महके बलमू तोहरी नेहिया ।

गहमरी जी कऽ लिखल एगो खेमटा में खेत में रोपनी करे वाली मजदूरिन जे आपन गोदी के बचवाँ के घरे छोड़ के रोपनी करत रहे ओकर कतना नीमन बखान करत गीत लिखलेन । ओके पढ़ले पे केहूँ महसूस क सकेला ।

बदरा बरिसे त भीजे मोरी धानी चुनरी
हलर - हलर डोले दूधवां के काँटी ,
बूने - बूने अंगिया में चूवे सगरी ।

गहमरी जी कऽ गीत में यथार्थवाद कऽ चित्रण जेतना सुघर तरीका से भइल बा उनकरे बेमिसाल लेखनी के कमाल कहाई -

पात - पात दुअरे के महुआ फुलाई गइल
अँगना फूलेला कचनार ।
कि हो मोरे अँगना फूलेला कचनार ।

गहमरी जी कऽ भोजपुरी गीत विशेष रूप से प्रकृति श्रृंगार से प्रभावित रहल । उहाँ के सब समय एगो बात पर धेयान दिहली कि पारम्परिक धुनन के दीवार कबो मत ढ़हे । ऐही से उहाँ के प्रचलित आ लोक प्रिय रागन पर ही सब समय आपन गीत के रचना कइली । भोजपुरी फिल्म बदे आपन गीतन के भी उहाँ के कभी साहित्य से दूर ना रखली । गहमरी जी आपन लिखल गीत से भोजपुरी साहित्य में अमर हो गइले । उहाँ के एगो व्यक्ति ना एगो "विचार" के रूप में मशहूर हो गइली । उनकर लिखल गीत उनकरा के संबोधन करी तऽ उनके पे खरा उतरत लउकत बा -

" कवना खोतवा में लुकइलू ,
आहि रे बालम चिरई "

रामपुकार सिंह 'पुकार गाजीपुरी'